गले पड़ता दुःख भारी है। दीनों वै।

ब्रह्मा आश्रम की तारने वाली। जग की रक्षा करने वाली

निज रक्त से भरने वाली।। क्या मूढ़ कटाय के

निज मौत से मार मरो रे ।।दीनों।

हे शासन सेती अर्ज करूं रघुकुल की औ गौर गऊ के ऊपर

जी का राम फर्ज के ऊपर। गात दुःख बताय के

धा धड़ से अलग करो रे। दीनों ।।

गजल

करे हैं खोट ध्यान कुछ भी जिन्दा के तमाम मनोबांछा देने वाले।
उन्हीं को ओ हैं बड़ी महानक.. हुए ये जालिम नशाने वाले ।।
पिये हैं उमर भर हैं दूध जिसका। हैं खाते मक्खन दही को मस्का।
गजब हैं काटें गला उसी का उसी का हैं खून बहाने वाले ।।
गऊ के जाये ही हल चलावें। गऊ के जाये ही अन्न उगावें।
जिन्हें कमाकर यह नित खिलावें। वही हैं इनके सताने वाले ।।
गऊ के जाये ही देश वासी। इन्हीं पै निर्भर है काश्तकारी।
इन्हीं की गर्दन पै हाय कटारी। चलाने हुए चलाने वाले ।।
माना है दुनिया में कौन ऐसा। करो जो उपकार [illegible]
खिला ये मक्खन जो रखा [illegible] बैल दे हल चलाने वा[illegible]

किसान भारत के आज सारे, दुखी हैं मुफ़लिस बहुत बिचारे
बिगड़ रहे हैं कर्ज़ के मारे, यह सब की रोज़ी कमानेवाले ॥
कभी जो दस को था नैन आता, वह सौ को भी अब नहीं है पाता
पकड़ लेते हैं अपना माथा, तमाम खेती कमाने वाले ॥
गौकुशी की ही बदौलत, हुई जो दूध और घी की किल्लत।
बता दो आवे कहां से ताकत, हैं सूखी रोटी के खानेवाले ॥
करोड़ हाँ ऐसे हैं यहां जन, जिन्हें नहीं होते घी के दर्शन।
हमेशा करते हैं खुश्क भोजन, शरीफ़ व रन्ज के सहनेवाले ॥
मिले नहीं जिनको दूध और घी, वह भला कैसे बल भोगें जी।
नहीं समझते मगर कुछ भी, ये मांस से तन फुलानेवाले ॥
गुनाह मोहसन कुशी का भारी, नहीं है बेगरज़ा बिचारो।
भला करे जो उसी को मारें, हो कैसे रहम जतानेवाले ॥
हुजूर पंचम जॉर्ज आली, हो चूंकि भारत के आप वाली।
तुम्हारी इसने पनाह पाली, तुम्हीं हो इसके बचानेवाले ॥
करो दया कर यह हुक्म जारी, न मारी जावें गऊ बिचारी
हुई है भारत प्रजा दुखारी, हैं आप दुःख के हरनेवाले ॥
किसी को सान्ति न जो हैं सताते, नहीं वह आराम सुख भी पाते ॥
हमेशा रहते हैं दुःख उठाते, किसी के दिल को दुखानेवाले ॥

प्यारे सज्जनो जोवा करना या कराना महापाप है। मत जिस तरह से हो
जोवा को रोकना हम लोगों का नितान्त कर्तव्य है जब कि इस जूआ खे-
लने वाले महानुभावों को क्या २ तकलीफें उठानी पड़ती हैं बताता हूँ

दोहा

विषधर वानर रोगिया, व्यभिचारी नार।
पांचो की कुदरत नहीं, छठवां जूआ खेलनहार॥१॥
धर्मराज से हो गये, ऐसे युधिष्ठिर भूप।
सब पृथ्वी हार गये हैं, नल राजा से भूप॥२॥

धिक्कार जूआ खेलन की, मत मानो न तो उत्पात की
धन तो बरबाद करता पर न हीं है, उसमें तेवर कोई लाभ नहीं है।
जूये से बद कर पाप नहीं है ये आदत बदजात की
लानत उन गुरु चेलन को। धि०
जीता ज्वारी धन खोवेगा, हारा मूड़ पकड़ रोवेगा।
चिन्ता में ना सुख सोवेगा। नींद न आये दिन रात की
दुःखी या बाप बड़े हैं उनको। धि०
गहना तक बालक मारेंगे, कुल जोती पर लीत आयेंगे
पड़ोसी के दिलों में हाथ डारेंगे। चूम ताकते मात की
भारत में जितने ऐसन को। धि०

लगि रहयो दे हि लि मि देना, हंसे गो दो पे हिलि मि देना
भारविबो है हिल मि देना . सुनेन गत पितु मात की
सीसा सन की झेलनको ॥ खि॥

दूसरा

खेलन में न ज्ञान नही है, पेशा जुआ ख्वारी का
अभिमान मन्दप नीति रहे ना, शील दया कुल प्रीति रहेना ॥
हार जीत कोई मीत रहेना, किसी खेल खिलाड़ी का।
पत किसी की ना हीं रही है। खेलन।
राजपाट धन बल हरादे। वे पावेती को पकड़ादे।
चौड़े हाथ में हाथ गहादे। अपनी नारी का ॥
मैं सांची बात कही है ॥ खे॥
जीता ख्वारी भड़ुआ बनावे। हारा खोटे पाप कमावे ॥
मात पिता नाना ठग ठगावे। चोर हो जारी का ॥
संगत भी सतान ही है ॥ खेलन।
अभिमान करे धर्म चारी करना, सत गुरु की काम नवरना
की सान रहे ध्यान उर धरना। कथन हमारी का
सत मत की हुआ गली है ॥ खेल॥
अब तो स्याल के कुछ लोगों के सूत के वाँ प्रमाण देंगे

द्यूत क्रीडन से बड़ा कष्ट होता है राजाओं के लिये अत्यन्त हानिकारक है

प्राचीन आचार्यों ने क्या दर्शाया है देखिये ध्यान से (श्लोक)

राज्ञो द्यूत क्रीड़ा वै घस्याऽपथ्य सेवनं नित्यम्

मत्तस्य चाऽन्नं सर्वं ॥ सद्योनाशं परं कुरुते ॥१॥

पूर्वं नामस्तदनु सकलं स्वार्थहानि विनादो,

मायामिथ्या ग्रहरसिकता ॥ राजनीते र्विरोधः ॥

स्पर्धा वृद्धिश्च पले मतिता • मत्सरो मान चिन्ता •

सन्तापश्च स्वजन विरहश्चेत्यमी द्यूतदोषाः ॥२॥

द्यूते जितं धनं लब्ध्वा, नो वेश्या सुरा भवेत्।

तस्माद्धि पतितो भूत्वा दुरन्तं दुःखमश्नुते ॥३॥

दैवानुकूलेन कदाचिदेव.

काचित्सा पंच चेताजन्तः प्रणाशः .

तदाज्ञया श्यानदृशानुबद्धश्रीर्वा

द्यूतेन पश्चाद्धनी कृतः सः ॥४॥

आजं दैववशाल्लोके, विदुषामपि धीः सताम्।

उचिताऽनुचितार्थेषु, विमुखा परिवर्तते ॥१॥

विद्वत्समागमे चिन्ता, तिरस्कारे पराक्रमः ॥

दुःखे स्वजन विनाशे ॥ दुःखे धैर्यं परिवर्तते ॥२॥

गुरु जन खेलने से पहले जन गण मन पश्चात् ईश्वर की जो प्रार्थना हुई है वह है –
देखा नहीं जानते होंगे अब तो चाहे कैसा हो धनी मानी पुरुष हो पर सब को
खेलना सब के लिये जरूरी है

अब कुछ ईश्वर की शरणागति में आये हुये पुरुषों का गान लिखते हैं

शरण हम प्रभु तेरी आये हुये हैं,
दो कर जोड़े सर को झुकाये हुये हैं।।
सभी दिन [illegible] में हम चित लगाये
जगे पापी पुण्य को भुलाये हुये हैं।।
दुई जग में फंस के प्रपञ्च माया,
कुसंगति से हरदम दबाये हुये हैं।।
बचन है न शक्ति न लीला की शान्ति,
अयोग्यता पै अपने लजाये हुये हैं।।
प्रवृत्त हो शुभ कर्म और शुभ गुणों में,
मिले धर्म धन जो गंवाये हुये हैं।।
हो सत विद्या और ज्ञान से शुद्ध हृदय,
नियम पालें जो तूने बनाये हुये हैं।।
संसार प्रीति पर उपकार सीखें
मिटे अन्धकार मन में जो छाये हुये हैं।।

दान के विषय में श्रद्धा होने के निमित्त ईश्वर प्रार्थना।

सुख शान्ति का हमें प्रभु, शुभ मार्ग अब दिखा दो।
आनन्द रस कहाँ है हमको यही बता दो ॥१॥
सर्वत्र नित्य रक्षक व्यापक सभी जगह तुम।
विज्ञान भी बड़े हो विद्या हमें पढ़ा दो ॥२॥
पालक तथा विधाता संसार के तुम्हीं हो।
हे दाता तुम गुणों की, कुछ गुण हमें सिखा दो ॥३॥
आधार तुम जगत के आधीन सब तुम्हारे।
कुछ प्रेममय सुधा अब हमको पिता पिला दो ॥४॥
दानी पिता बड़े तुम साधन सब दिये हैं।
कामना न माँगने का अब प्रभु सत्य को दिला दो ॥५॥

प्रकृति की महाविभूतियों ने दान करने की रीति बतलाया है पर
सर्वेषामेव दानानां ब्रह्मदानं विशिष्यते - यह मनु भगवान
का वाक्य सर्वोत्तम है तथा श्रेष्ठ दान यही है कि ईश्वर ज्ञान में दान
करने से ही मनुष्य इस असार संसार से पार हो सकता है
अन्यथा कोई उपाय भवसागर से पार होने का नहीं है
यथा: यदाहुर्गुरो [illegible] तेषां ज्ञानमनादि।
हा परे भव में [illegible] दान [illegible]

सत्य की व्याख्या मानो सत्य पहले लिखे हैं

सत्यान्नास्ति परो धर्मः, सत्येनास्ति भयं क्वचित्,

सत्यं वद। सत्यं ब्रह्म - इत्यादि श्रुतिः

श्लोकः

सत्यं नामाव्ययं नित्यमविकारि तथैव च।

सर्वधर्माविरुद्धं च, योगेनैतदवाप्यते॥१॥ भा॥ शा:॥

सत्योपरि योगभाष्ये व्यासस्य कथनम्

"सत्यं यथार्थे वाङ्मनसे यथादृष्टं यथानुमितं यथाश्रुतं तथा वाङ्मनश्चेति परत्र स्वबोधसंक्रान्तमेव मुक्ता सा यदि न वंचिता भ्रान्ता वा प्रतिपत्तिवन्ध्या वा भवेत् इत्येषा सर्व भूतोपघातपरैव स्यान्न सत्यं भवेत् पापमेव भवेत्तेन पुण्याभासेन पुण्यप्रतिरूपेण कष्टतमः प्राप्नुयात् तस्मात् सर्वभूतहितं सत्यं ब्रूयात् इत्यादिभिः युक्ति विषय लिखी हैं

शतपथ में भी लिखा है कि "यः सत्यं वदति यथाग्निं समिद्धं तं घृतेनाभिषिञ्चेदेवं हैनं स उद्दीपयति तस्य भूयो भूय एवं तेजो भवति. अथ यो वै अनृतं वदति इत्यादि का व्याख्या में धर्म को अंधकार सत्य के ऊपर बतलाया गया है अब उपरोक्त श्लोक का भावार्थ हिन्दी में दर्शा रहे हैं।"

सत्य उसे कहते हैं कि जैसा देखा हो सुना हो या अनुमान किया हो उसी को वैसा
ही शुद्ध मन और सत्यता से कहना तथा अपने निश्चय किये हुए को दूसरों
से कहै तब निष्कपट भी सरल हृदय और सत्यता ने भाव कहे जिससे सब
प्राणियों को लाभ हो कि सोके पराये न हो क्यों कि जिन वचनों से जीवों को हानि
पहुंचती है वे सत्य नहीं होंगे। क्योंकि मनु ने लिखा है कि सत्यं ब्रूयात प्रियं
ब्रूयात न ब्रूयात सत्यमप्रियम। अतः इनसे पाप ही होता है और जो
लोग पुण्य का बहाना करके संसार को धोखे में डालते हैं वे महान कष्ट
पाते हैं अतः सब प्राणियों के हितकारक सत्य का भाषण करना चाहिये
जो सत्यवादी है उसकी उन्नति इस प्रकार होती है जैसे घृत के द्वारा
अग्नि का तेज बढ़ता जाता है और उसका तेज और सुख अनन्त
बढ़ता जाता है जो असत्यवादी है वह इस प्रकार नष्ट होता है
जैसे जल डालने से अग्नि का तेज घटता जाता है अतः
सत्य बोलना चाहिये क्यों कि झूठ बोलना महा पाप है अतः हे प्यारे
सज्जनो सदैव ध्यान रखा करो कि सत्यवादी पुरुषों की ही संगति करें
देखो सत्य बोलने वाला ही हरिश्चन्द्र नाम का सूर्यवंशी राजा था
जो सत्यता पर तन मन धन न्यौछावर कर गये जो कि अब तक उनका
यश प्रसिद्ध है कि। दोहा। चन्द्र टरै सूरज टरै, टरै जगत व्यौहार
पै दृढ़ श्री हरिश्चन्द्र को, टरै न सत्य विचार॥१॥

गज़ल ॥१॥

इस धर्म ही ने राजा हरीश्चन्द्र पैदा किये (सत्य की खातिर)

दानी थे इतना के सल्तनत में भर दिये ॥

दिन उनके जो तमाम गमों रंज में कटे।

पर कर लिया गवारा हिंद जो न उससे जरा हटे ॥

कितने ही उनके धर्म का ख्याल होवेगा..

इनको लिया कुंवर भी बिका ख्याल बिक जाये ॥

(सि: भक्ति पर) श्री राम ने भी धर्म पे क्या रजा कुबूल किया।

तख्ते शाही को छोड़ के बनवास ले लिया ॥

चौदह बरस का बन में ज़माना बसर किया।

कुछ दिन न अपने भाग्य ने मां बाप को दिया

कैकई बचा लिये आपने पूरन करके गद्दी दे ही लिये उन दुख दिया

पर करनी हाल जग में नेक भरत ने क्या किया सुनो।

कुछ भी रखे जब आये भरत जी गुरु वतन।

अभी मां से दिन में किया अपने पहरन ..

दरबार ताजो तख्त को मैं जाऊँ वे गये वन हवन।

हरगिज़ न राज गद्दी पे रखूंगा मैं चरन।

चौदह बरस जमीन पर आसन जमा दिया।

तख्ते शाही खड़ाऊं, सेउन की सजा दिया

महान व्रत की सफलता प्रत्यक्ष है जिन्होंने राष्ट्र के [illegible] किया।

प्यारे सज्जनों जिस जाति में जन्म ले जिस भूमि पर अपने जाति के उन्नति के

लिये अपना तन मन धन समर्पण नहीं किया उसका जन्म व्यर्था

श्लोक:

स जातो येन जातेन, जाति वंश: समुन्नतिम ॥
परिवर्तिनि संसारे, मृत: को वान जायते ॥१॥
जिसको न निज गौरव तथा निज देश का अभिमान है।
वह नर नहीं नर पशु निरा है, और मृतक समान है॥
स। जिस जाति में पैदा हुये उसके हक का ध्यान न हुआ।
उस बाल काल बिना ख्याल से, अब तक जहाँ पालन हुआ।
निज पूर्वजों के कामवर, जननी जनक जन्मा मगर,
कुल जाति वारी जन्म भूमि धारा [illegible] पर
तन मन लिया सुख से समर्पण है नहीं जिसने किया।
है नाम उसका जन्म जग में लाभ क्यों तूने दिया ॥२॥
जननी जन्म भूमि वेदी पर, जो हर्ष [illegible] हो जाते हैं।
धन्य २ जग जीवन उनका, [illegible] पाते हैं॥
चतुर भारती जो हैं [illegible] कर देते हैं
जिन्दे हैं [illegible] करते हैं

करते रहो आनन्द से जो जाति-कर्म है

उसको निबाहिये कि जो हिन्दुओं का धर्म है.

बरबाद होते जा रहे जो कि जी ने निज कर्म को,

संसार त्याग दिये जो ने पाखंड धर्म को॥

वज्रसूची में लिखा है कि यजुर्वेद में लिखा है कि ब्राह्मण लोग

कलियुग के अन्त में शूद्र धारण करेंगे बरन हीन हुआ

आपस में ऐसा हुआ कि शूद्र जनेऊ पहनने लगे जिनसे वरणसंकर

लक्षण हुए। चौ। शूद्र द्विजन्ह उपदेसहिं ज्ञाना।

मेलि जनेऊ लेहिं कुदाना॥

दोहा

बादहिं शूद्र द्विजन्ह सन, हम तुम्ह ते कछु घाटि॥

जानै ब्रह्म सो विप्रवर॥ आँखि दिखावहिं डाँटि॥॥

यह नहीं समझते कि गीता में भगवान ने क्या लिखा है देखिये

श्रेयान्स्वधर्मो विगुणः परधर्मात्स्वनुष्ठितात् ॥

स्वधर्मे निधनं श्रेयः॥ परधर्मो भयावहः॥ अ॰ 3

स्वे स्वे कर्मण्यभिरतः॥ संसिद्धिं लभते नरः।

स्वकर्मनिरतः सिद्धिं यथा विन्दति तच्छृणु ॥ अ॰ 18॥

अतः ब्राह्मण क्षत्रिय वैश्य शूद्र अपने अपने कर्म से ही सब मनुष्य उन्नति को प्राप्त होता है

भारत भोग पर इकलमान

इस गरह कर गया है मनुष्को करम के बदले।
इक दिन कमाई जे गी जो इसे सीतम के बदले॥
हरगिज तारी फूलाँ है नाहक दुखाते नाहक।
तो फिर तो ... आहे इसम के बदले
देगा न हा पूछो ... न जानते होगे।
जो है ... हो ... सम के बदले॥
इस ... को बूँद पर ...
[illegible] वागो ...

आज कल के महाजन बड़े आदमी ... होते जो है वो कि जो उनके खून-
लगाते गाड़ी मे ... आते ... आते परदान में ...-
सा भी नहीं देते॥

इसा सके पान लिखे हत जो है वे हम भी मेंवते आज ...
जो ती किनारी की सारिह सी और इत ते इव हो ... कि जो जनता
ऐसा जो पाल बहलान तो है इन भूप कहाँ पवते फिरे है ...
साल कहें वड़ी सा हिन्दी की आदमी मे देखन इसके अधेला
[illegible]
[illegible]
[illegible]

एतद्देशप्रसूतस्य । सकाशादग्रजन्मनः।
स्वं स्वं चरित्रं ।। शिक्षेरन् पृथिव्यां सर्व मानवाः ॥१॥
इस से यह सिद्ध हुआ कि पहिले जो ईश्वर देश है तो भारतवर्ष
इसलिये विदेशों में जितना भी ज्ञान और अंग्रेज विद्वान भी मानते हैं,
गायन्ति देवाः किल गीतकानि। धन्यास्तु ते भारतभूमिभागे,
स्वर्गापवर्गास्पद हेतु भूते भवन्ति भूयः पुरुषाः सुरत्वात् ॥२॥
कि देवता गाते हैं
जानीमहे नैतत् क्व वयं विलीने, स्वर्गप्रदे कर्मणि देहबन्धम्।
प्राप्स्याम धन्याः खलु ते मनुष्या, ये भारते नेन्द्रियविप्रहीना ॥३॥
जहाँ देवगण भी आने की महति इच्छा करते हैं वहाँ की
शान और मान कितना है कि राजा ने देखिये एक जन [illegible]
पता कहाँ पर गया है भारत, वह महिमा आज अनजान तेरा,
कहाँ गई तेरी शान शौकत। किधर गया वह धन मान तेरा ।।
कहाँ गई तेरी वेद विद्या। वह ईश्वर ही ज्ञान का खजाना।
अर्जुन में ईश्वर ने जो सौंपा।। किधर गया है वह ज्ञान तेरा।
कहाँ वह ज्योतिष कहाँ वह मंत्र। कहाँ है तप वह नारदी माया।
[illegible] से अवतार ओ पहुंचाना था, किधर गया वह सम्मान तेरा।
कहाँ वह शक्ति कहाँ वह ज्ञान है। कहाँ वह [illegible] है।।

कि जिससे मानिन्द माहि-ए-बेआब, चमक रहा था जमाल तेरा॥
कहाँ गया तेरा सब भरोसा, सुकूँ में हर्ब सुधार ना रहा।
गया कहाँ पर वह प्रेम पूरनि, कि था जो अनमोल लाल तेरा॥
समा दिया कि विपाद मोगान नदी, अजर अमर के भजन में हावाना।
[illegible] भरपूर ब्रह्म बिद्या तेरी था। हरदम कमाल तेरा॥
नहीं था दुनिया में तेरा सानी, सुने हुनरो हुनर में कोई।
था सारा मुल्क तेरे मे था हे आमिन, सेजा था रोशन हलाल तेरा॥
नहीं था तू ऐसा काहिल जिस्ता, नहीं था ऐसा सुस्त तेरा हाल।
नहीं था ऐसा अलील तेरा हाल, नहीं जिन्दगी था गो हाल तेरा॥
नहीं था तुझ में मुफलिसी नादानी, नहीं था तुझ में कोई नादानी।
हमेशा रहता था तुझ से राजी, वह था दिल अजनबी जाल तेरा॥
जवान लगा तेरे होरे हैं, इनायत जो निकमन कोई।
फहूल हलकी के हमबदने, जिन्हें थे यूँ सब निकाल तेरा॥
गुलाम के कर जन मजो था, कणाद गौतम औ व्यास आदि।
मति है सकते पकड़ के रोवें, जो देखते हैं ये हाल तेरा॥
कमाल अफसोस है हसरत, जिनें औलाद रोते हैं।
नहीं है कोई कि उसको देखे कि क्यों है ये हाल तेरा॥
[illegible]

सभी के सब तरफ से बेखबर हैं कोई [illegible] हाल तेरा ॥

न कारखाने में मिलन तूली, के ऐसी न्यामत से भरा है।

न गावें क्यों कर किसी के साथ [illegible] क्यों कर तुम्हारे [illegible]

[illegible] है जबके दुनिया भारत की हो रही है कि किसका माना [illegible]

[illegible] देवन में जा रही सामने [illegible] आज [illegible] बातें के [illegible]

[illegible]

[illegible] दुनिया होजाय [illegible] दिन ही

इस [illegible] मेरे [illegible] से सब [illegible] नहीं है देखिये ॥

गज़ल

है वेह सजन तो यह भाया, सताने जिसको जी चाहे।

नहीं कोई गमो हामी है, रुलाने जिसको जी चाहे॥

दिखावत न धर्मी दिल को, न जाना नाम लिया का,

किसानी [illegible] जिसका जी चाहे॥

[illegible] रहाई [illegible] की।

मिटा [illegible] जाता है, न जाने जिसका जी चाहे॥

सितम और [illegible] कोई [illegible] ही [illegible],

[illegible] जाने जिसका जी चाहे॥

[illegible]

नहीं कुछ कूटपद हान, आज माने जि सकाजी [illegible] ।

कहे मोदूभी जो हितं की, उन्हे समझे हैं पेहचै ही

नहीं थी आको सुनते हैं, धना ने पने सका जाना है ।

[illegible] ति गडी है भारत की सुधारे हल्द। मिल [illegible]

[illegible] मिलता है, उसने निस करीना है ।

[illegible] देश के भारत के अंग [illegible] भी [illegible]

भारत की [illegible] नहीं है, [illegible]

[illegible] और [illegible]

[illegible] अब [illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

अब मुहताज तू है औरों का, क्या उलटा चाला। क्या॥

कपड़ा तेरा बाहर से आवे, देश तेरा कोई और बनावे।

सीने के लिये रुई न घर में, अजब रंग डाला ॥क्या

धन दौलत का क्या था ठिकाना, हासिद था सब तेरा ज़माना।

बच्चे तेरे भूख के मारे, करते आहो नाला। क्या॥

आहो हसद जितनी थी तेरी, गजनी की जबान और अंधेरी।

गौरव हरकर ले गये सब कुछ, तोड़ ताड़ ताड़ा ॥ क्या।

रही सही जो बची बचाई, नाइतफ़ाकी ने वह गंवाई।

अब तो ख्वाब गफ़लत से जागो, होगया उजाला ॥ क्या

बढ़ चलकर उमर न खाओ, कोई कौम न कन्ना निकालो।

छोड़ कर देश अपने को, सेठ बाबू कालका ॥ क्या ॥

देखो चीन जापान को, देखो पहलो देखो रूस को।

इन्साफ़ कहे होगी उन्नति रहे बीन बाना ॥ क्या

[illegible]

पापकर्मकृतं किञ्चिद्यदि तस्मिन्न दृश्यते ॥

न पते तस्य पुत्रेषु, पौत्रेष्वपि च नप्तृषु ॥१॥

बीजान्यग्न्युपदग्धानि, न रोहन्ति यथा पुनः ॥

ज्ञानदग्धैस्तथा क्लेशै नात्मा संपद्यते पुनः ॥२॥

अब विधवाओं के [illegible] धर्म [illegible] हैं [illegible]

इन का [illegible] है और [illegible] हैं [illegible]

विधवाओं का धर्म

कोमलं विकासी [illegible] प्रतीय [illegible]।

साधता [illegible] पतिते [illegible] हित: ॥४॥

[illegible] नहि तिमो [illegible]।

[illegible] विधवा [illegible] पतिम ॥२॥

[illegible] पाने [illegible] मते नन्मे।

[illegible] विधवा [illegible] ॥३॥

इन उक्त नियमों से रहने की [illegible]

[illegible] विधवा [illegible] धर्म जो है [illegible]

[illegible] विधवा [illegible] है

[illegible] इनको [illegible] हैं। [illegible]

[illegible] विधवा [illegible] है

ऐसा ही [illegible] कि या है ॥

कवित्त

[illegible] उतारे [illegible] प्रेम [illegible]

[illegible]

[illegible] है कि के [illegible] न करैं [illegible] आनन्द [illegible] है

[illegible] न [illegible] छोड़ दें [illegible] लिखौं [illegible] दान [illegible] है [illegible]

[illegible] है [illegible]

अब कुछ [illegible] दोहा [illegible] लिखे गए।

[illegible] है [illegible]

[illegible] नदी के तीर॥१॥

धन यौवन को पाय के, कोन करत अभिमान।

[illegible] दिन का मिहमान॥२॥

मरता [illegible] के [illegible] में, [illegible]

[illegible] मीन है [illegible] देखा [illegible] विचार॥३॥

[illegible] के जोश में [illegible] मिलेंगे कर।

[illegible] दिल में [illegible] कर॥

[illegible] हैं [illegible] कर॥

[illegible] कर॥

सितम है [illegible] मिलेंगे कर॥

रहे हम [illegible] जातों में, [illegible] जातों में॥

[illegible] जातों में। [illegible] जातों में

[illegible] जातों में। [illegible] जातों में

विद्या का आदर्श:

विना यत्ते सारता है न या सा विद्या

विद्याति या विर्जना: सा विद्या

नेति यदा भाना तन्त्र स इयं यथा सा विद्या

संसार में संस्कृत विद्या तीन प्रकार की है विद्या होती है
कई प्रकार कवियों ने यह सिद्ध कर दिया है कि यदि कोई
उपासना या भेद ल्यती मोक्ष प्राप्त जो विद्या है तो संस्कृत
विद्या मात्र रूप पर प्रकट विभ होकर जाननजनों है
ध्यान दे सुनिये।

न दान विद्या से बढ़ कोई, न भ्रम तिना सोको ही विद्या।
कहां है भारत के नव विद्वानो। तुम्हें पुकारे है सोई विद्या।
उठाओ विद्या की आरती को, जगाओ भारत की भारती को।
वही है भंडार का पुजारी, कि जिसने पहले संजोई विद्या।
उसी को वतन का न आत्मा है, कि जिसके रग रग में रमी है।
अजी जब हम जगे तो विद्या, हमीं तो सोये तो सोई विद्या।
हमें तो वतन के नाम की है, पुकार भी राष्ट्र के नाम की है।
हमारा सर तो भी कल उठेगी जो हमने मिहनत से बोई विद्या।।
सा विद्या या विमुक्तये। विद्या कौशल प्राप्त है।।

काहे विद्याकूं नाहीं है पढ़ुंती इंगलिस्तान में।

भारत सुत गन आदर कीना, विद्या रत देखत जग दीना।
बसत रहत भा ख्याति विहीना, भरके नीर अंखियान में॥

कहूं कणाद ब्रह्मा सनकादिक, गौतम व्यास जनक शुक आदिक।
रहत न कोई भी अब ज्ञाह्मक, आपों के सन्तान में।

शिवि दधीच हरिचन्द युधिष्ठिर, राम कृष्ण अर्जुन भीषमवर।
कपिल कणाद व्यास से ऋषिवर, सब थे थिर पद प्रमाणमें॥

महाभारत पश्चात हमारा, आग दिया करना व्यापार।
मूरखता का पूरा व्यापार, पावती हिन्दोस्तानमें॥

मूरखता ने पांव जमाया, आपस की सब मारी माया।
निज दुःख लखता जगत छपा पा, भारत के सन्तानमें॥

प्रथम गमन विद्या ने कीना, पीछे सब सम्पति चल दीना।
और देश कुमति ने भीना, आवेन हो बयानमें॥

हे प्रभु सुमति विचारन दीजै, विद्यादि भारत में दीजै।
सुत सब देश शास्त्रों में लीजै, पंडित हों हिन्दुस्तान में।

सूरज उगने विद्या पढ़ांते, पढ़ुंती इंगलिस्तान में।

विद्या एक ऐसी चीज है जिसको न कोई चुरा सकता न बांट सकता
छीन सकता न बांट सकता न धार सकता सबसे विद्या है

मनुष्य जाति का एक विशेष रूप है विद्या वन्धु सदृश सहायिका
तथा देवता ओं की देन [illegible] ओं की रूप है विद्या द्वारा मनुष्य
सभा ओं से पूजित होता है अतः विद्या विहीन नर पशु है इसी से
कवि ओं ने भी आजीवन कविता बना दी है । भजन

कहे कवि [illegible] जो सब सन्मति चाहो ।
विद्या की वृद्धि बढ़ावे, गौरव [illegible]
ज्ञान की यह भण्डार [illegible] जो सब
विद्याहीन नर का [illegible] हरती है यह सब [illegible]
मन में करो विचार, जो सब
इनको नहीं चोर चुरावे, नहीं राजा दण्ड करावे
करो [illegible] जो सब ।
राजा है सदेश ही पूजित विद्वान [illegible]
[illegible] जो सब ।
गुरु ओं का भी यह [illegible] है [illegible]
इसी को [illegible] जो सब ।
यह नित [illegible] सिर पे [illegible] ॥
[illegible] जो सब ।
यह [illegible] और [illegible]
मुक्ति का [illegible] जो सब

विद्या की है यह माया दो पल में सुख की काया।

अनादि से [illegible] जो सुख।

बहु धन मशीन हैं जाती, [illegible] दौलत लाती।

खींच कर सागर पार। जो सुख।

यह विविध भांति के कौशल हैं विद्या ही के फल। सब

जाने सब संसार। जो सुख।

[illegible] मदद जो [illegible]

देश का हो उद्धार। जो सुख॥

न चौर हार्यं न च भ्रातृ भाज्यं, न राज हार्यं न च भारकारि।

व्यये कृते वर्धत एव नित्यं विद्या धनं सर्व धन प्रधानम्॥

विद्या नाम नरस्य रूपमधिकं प्रच्छन्न गुप्तं धनं

विद्या भोगकरी यशः सुखकरी विद्या गुरूणां गुरुः।

विद्या बन्धुजनो विदेश गमने विद्या परं दैवतम्

[illegible] पूज्यते न हि धनं विद्याविहीनः पशुः॥

[illegible] नृपत्वं [illegible] नैव [illegible] कदाचन।

स्वदेशे पूज्यते राजा विद्वान् सर्वत्र पूज्यते॥

हितोपदेशः। रूप यौवन संपन्ना विशाल कुल सम्भवाः।

[illegible] विद्याहीना न शोभन्ते, निर्गन्धा इव किंशुकाः।४।

भोज प्रबन्धः । मातेव रक्षति पितेव हिते नियुङ्क्ते
कान्तेव चाभिरमयत्यपनीय खेदम्।
कीर्तिं च दिक्षु विमलां वितनोति लक्ष्मीं
किं किं न साधयति कल्पलतेव विद्या ॥४॥

हितोपदेशः– माता शत्रुः पिता वैरी येन बालो न पाठितः।
न शोभते सभा मध्ये हंस मध्ये बको यथा ॥५॥

,, विद्या शस्त्रस्य शास्त्रस्य द्वे विद्ये प्रतिपत्तये
आद्या हास्याय वृद्धत्वे द्वितीयाद्रियते सदा ॥६॥

इत्यादि प्रमाणों से सिद्ध हुआ कि विद्या सर्वोत्तम वस्तु है तथा ईश्वरीय कार्यों की उन्नति मार्गिका है। इस को ही कवि महाराज यथा बतलाते हैं।

स०। मातु सम रक्षा करति पुनि पितु सरिस हित कारिणी।
पुनहिं रमणी सम रंजन तन मन ताप क्लेश निवारिणी॥
भोग यश सुख राज मान सुजान औ धन सम्पदा।
दायिनी विद्या समान न आन जग में और कोउ सम्पदा॥

कथं– विद्या ददाति विनयं, विनयाद्याति पात्रताम्।
पात्रत्वाद्धनमाप्नोति धनाद्धर्मः ततः सुखम् ॥७॥
सुखी होना ही तो विद्या पढ़ने का प्रयोजन है

सज्जनों ! ध्यान दे गरा चित दे वो भव दृश्य सिंहासन के
प्रति पालक पितृ भक्तों के और निहारिये जिनमे प्रथम
श्रवण कुमार रामचन्द्र भीष्म पितामह ये महाराणा
नीपुर के हो चुके हैं और पितृ सुख के लिये घोर तप
रचा था और कष्ट साध्य करते हैं।
देखिये श्रवण जी पिता माता के अन्धापन दूर करने के
लिये क्या २ युक्ति और कष्ट का अनुभव किया है
मुझ पै ये हैं बादल घिरें आफत के बला के
सुन साथ मैं ने ग मेरे माता पिता के ..
बतला के कोई औषधि हो गर कोई न दो.
उपकार होगा आपका भाइयों कोई न दो ..
बाद में वशिष्ठ जी ने श्रवण के माता और पिता
के अन्धे होने का कारण बताया था और आशीर्वाद
दिया कि। जिन की कृपा से नूतन भाव वितपै आते हैं
जिन की दया से गूंगे भी भाषण सुनाते हैं
पतित को जो पल भर में साहिब बनाते हैं
जो दीन की पुकार को सुन दौड़े आते हैं
तारते हैं जो गजराज जो भक्तों के वास्ते

आँखे भी नहीं देखेगा अन्धों केना यतो ॥१॥
इस प्रकार की आशीर्वाद सुन कर श्रवण देव जी
कहते हैं। अब मैं मात पिता को लेकर यह गंगा नहाऊंगा
और प्रतिज्ञा यह करता हूं सारे तीर्थ कराऊंगा
यह प्रतिज्ञा सुन श्रवण की दशरथ महाराज कहते हैं
कि अन्धे माता पिता को कैसे तीर्थ करवाओगे —
तू हो लड़का है कि। उत्तम पवित्र की काठ की कांवड़ बनाऊंगा
टांगूं कीतार इनको मैं इसमें बिठाऊंगा
श्रद्धा के साथ फिर मैं कांवड़ उठाऊंगा।
कन्धे पे अपने मात पिता को चढ़ाऊंगा॥
ले जाऊंगा वन दूसर रह तीर्थों के द्वार पर।
नौका यह पार होगी प्रभु के आधार पर॥
पुत्र कथन सोहन पर श्री माता पिता का मन कर प्रसन्न
गीत गाते हैं कि आज मैं यह बतलाऊंगा कि संसार में
पिता न कि मात न किन्तु उन हररोज़ यह है ॥
जो श्री भजन नाम जपे उन का तो शोभ को कोस निकाइ मैं
जो हाथ न सेवा करे उन की तो हाथ भी का टके डारू मैं ॥
और जो न झुके पग में उनके तो पाड़ लेता है आसरे

जिन्ने नैन दिये इस जीवन पर यह नैन उन्हीं पर वारूँ मैं ॥3॥

शान्तनु महाराज पुत्र से कहते हैं कि ।

अंग शिथिल हैं अन्ध दशा है केश सफेद दिखा रहे हैं ।
दाँत उखड़ सांस चढ़े हैं बहु विधि रोग सता रहे हैं ॥
प्राण पखेरू इस पिंजरे से मोक्ष केवल मना रहे हैं ।
तीर्थ के तीर पै आ पहुँचे केहि विधि कर और उपाव करा रहे हैं ।

पिताजी यह बात सुनकर श्रवण देव जी उत्तर देते हैं

हाजिर है सब शरीर यह सेवा के वास्ते ।
बलिदान पुत्र है पिता माता के वास्ते ॥
कन्धों पै होगी कांवडी और कांवडी पर धाम ।
ले जाऊंगा मैं इस तरह धामों के वास्ते ॥
जन्म जन्मान्तर हो भक्ति पिता माता की ॥
मैं रहो जन्म तो सेवा में जन्म दाता की ॥

माता का पुत्र पर किस प्रकार का प्रेम रहता है इस बात को बताते हैं

माता को दुख होने पर वह उसे लाड़ लड़ाती है ।
नव मास गर्भ में रखती है और अपना दूध पिलाती है ।
खुद तो सोती है गीले में सूखे पर उसे सुलाती है ।
मल मूत्र सदा धोती उसकी बलिहारी उस पै जाती है ।

ऐसी माता को त्यागे जो वह पुत्र नरक का गामी है।
वह पुत्र कुपुत्र कहलाता है। वह पुत्र ही दुखदायी है॥

दोहा

सेवक सौ भी होय तो, जाय नहीं सन्ताप।
कुलदीपक उस पुत्र से सुख पाये माँ बाप॥१॥
पुत्र ही करता है सदा, सेवा और सम्मान।
मर जाने पर पुत्र ही देता है जल दान॥२॥

श्रवण देव की सुकुमारता देखकर बापू महाराज कहते हैं कि
परिश्रम जब बहुत होगा तो हिम्मत टूट जावेगी।
लेकिन जब अंग टूटेंगे तो कांवर छूट जावेगी॥

श्र.का.उ.। सूरज चहे आकाश से चन्द्रमा उतर आये
चाँदनी भी चहे ओस के मस्तक से खिसक जाय॥
बादल चहे पानी की जगह आग बरसाय।
भूकम्प हो संसार में या मेरा डग मगाय॥
प्रतिज्ञा की शृंखला ये मेरे सारे टूट जाय।
कांवर नहीं छूटेगी चहे प्राण छूट जांय॥

तीर्थ में माता पिता ने बहुत समय कांवर भी श्रवण
देव जी ले जाते हैं कि इनको मां में सब मिलता है माँ बाप को
मिलता।

मिलें पदार्थ चार मिलें सेवक सुत नारी
मिलें भूमि धन धाम अश्व गज आदिक सवारी
कहलाते वेद मिले मिलें सम्पत भी भारी
ऐसी सुन्दर घड़ी नहीं मिलती महतारी
ब्रह्मा विष्णु महेश भीत वन्दन से आ मिलें.
ऐसा उत्तम समय तो बार बार नहिं ना मिलें.

१५. का. छं. छं. । ज्ञानी है श्रवण और शास्त्रों की दया अनेक ।
ज्ञानी नाना भांति नई भानुसी दिखाती है
ज्ञानी है वणिज व्यापार शील रीति सारी
ज्ञानी अति प्यार प्रेम मही में बढ़ाती है,
ज्ञानी है प्रबन्ध कराना राम कला का बदला,
ज्ञानी साम दाम दंड भेद भी कहाती है,
जैसे करना ज्ञानी नर देश विख्याती
पितृ भक्ति ज्ञानी नतो क्या जिन्दगानी है.

श्रवण कुमार का कुछ ज्ञान और पितृ भक्ति परिशास्त्र
वेद और स्मृति का कुछ विचार पांडित्य कर अब महाज्ञानी
महात्मा राम चन्द्र जी की पितृ भक्ति दिखलावेंगे जिन्हें।
पिता की आज्ञा मान सुख आनन्द को त्याग मार्ग चौदह वर्ष

जंगल में महान् फल सहायता जिनका नाम और गुणगान होता है

नहीं है सबसे ऊंचा स्थान पिता माता ही हैं भगवान

माता गौरी का रूप है, पिता शंकर का स्वरूप है माने वेद पुराण।

अपना तप तीरथ योग यज्ञ व्रत मात पिता में जान

प्रेम से पूजन करि के मात को, मनवांछित फल होवे कल्याण।

गौरीशंकर के कुछ चुनाव कहने पर श्रवण का उत्तर

दोहा

कोई चाहे धन मान को, कोई चाहे सुख साज।

कोई चाहे संसार में, तीन लोक का राज॥१॥

योगी चाहे मोक्ष को, ज्ञानी चाहे ज्ञान।

श्रवण दास के हृदय में, मात पिता का ध्यान॥२॥

गान ॥१॥

अगर इस ख्वाब के मूरत बने तो ख्वाब हाजिर है।

अगर इस आँख का अरमान ले तो आँख हाजिर है।

मेरी रग रग मेरी नस नस अभी बलिहार हूं उन पर है।

पिता माता की सेवा में मेरा जीवन निछावर है।

मैं इनका धन मान के और राह हूं मेरे पिता माता हैं

मैं इनकी आत्मा हूं और यह मेरी आत्मा में हैं

मातरं पितरं चैव, साक्षात्प्रत्यक्षदेवते॥
मत्वा गृही निषेवेत, सदा सर्वप्रयत्नतः ॥१॥ मनु:
यन्मातापितरौ क्लेशं, सहेते संभवे नृणाम्॥
न तस्य निष्कृतिः शक्या कर्तुं वर्षशतैरपि ॥२॥
पिता धर्मः पिता स्वर्गः, पिता हि परमं तपः।
पितरि प्रीतिमापन्ने, प्रीयन्ते सर्वदेवताः ॥३॥
पितृभ्यश्चादिका माता गर्भधारणपोषणात्।
अतो हि त्रिषु लोकेषु नास्ति मातृसमो गुरुः ॥४॥
वेद का प्रमाण। मातृ देवो भव पितृ देवो भव
यह सामवेद की [illegible] भक्ति दर्शाते है॥
देखिये ये सब सुख त्यागकर पिता आज्ञा मानकर रामचन्द्र महाराज
अपने पिता दशरथ के ऊपर [illegible] और अपना जीवन निछावर करता है
दशरथ राज नियोगे दं, वचनं [illegible]
शृण्वतां ऋषिपालानां, यद् [illegible] विदितः कृते ॥१॥
राज्यं त्यज स्वदेवेन, भवान् त्यजतु नराधिप।
अनृतं हेतोः पिता, करिष्ये सर्वविजितं [illegible] ॥२॥
अग्नि प्रज्वलितं पेदाशः, [illegible] प्रविश्यति॥
पतिष्ये [illegible] लोकं राज्यं देवेषु [illegible]

पदिवा लाखिन सेना मनां नाम सत्तं कदाचन ॥३॥

दोहा

सिन्धु चलै मरजाद तजि, उनटै भावनि भनना
तौलौ नचन न श्री भीष्म को, सोनहिय हुलै रहना ॥

सवैया

चलै शेष डोलै मही मेरु हल्लै महा रुद्र को तीसरो नैन खुल्लै।
चहुं ओर तोपैं चलैं बाण छूटैं कमान और शमशेर की मार बोलैं॥
उठैं रुण्ड मुण्ड परैं झुण्ड लोटैं भरैं कुण्ड लोहू बहैं वीर डोलैं।
चलै प्राण जावैं करैं गान सारद दैवैन तेता ने भीष्म मउजो हैं॥

छन्द

आज जो प्रभु हिं न शस्त्र गहाऊं,
तो लाजौं गंगा जननि को शान्तनु सुत न कहाऊं॥
रथ चक्र तोड़ महारथी साइ कपि ध्वज सहित गिराऊं,
पाण्डव सेन समेत सारथी शोणित सिन्धु बहाऊं॥ आज
जीतें तो प्रभु ते कें जगत में जीत निशान फिराऊं
मरौं तो मन्दिर भेद भानु को सुरपुर जाय बसाऊं। आज
इतनी शपथ करौं प्रभु मति छलिया गति नहिं पाऊं।
सूरश्याम मरता बिन जग समता को जियतन पीठ दिखाऊं। आज

सन्ध्या करना द्विजों का महान कर्तव्य है

श्लो.। विप्रो वृक्षो मूलकान्यत्र सन्ध्या,

वेदाः शाखा धर्मकर्माणि पत्रम्।

तस्मान्मूलं यत्नतो रक्षणीयं,

छिन्ने मूले नैव वृक्षो न शाखा॥१॥

दे.भा.। सन्ध्या येन न विज्ञाता, सन्ध्या येनानुपासिता।

जीवमानो भवेच्छूद्रो मृतः श्वा चैव जायते॥२॥

तस्मान्नित्यं प्रकर्तव्यं, सन्ध्योपासनमुत्तमम्।

तदभावेऽन्यकर्मादौ नाधिकारी भवेन्नरः॥३॥

म.स्मृ.। पूर्वां सन्ध्यां जपन्तिष्ठेत् सावित्रीमार्कदर्शनात्।

पश्चिमां तु समासीनः सम्यगृक्षविभावनात्॥४॥

पूर्वां सन्ध्यां जपन्तिष्ठन्नैशमेनो व्यपोहति।

पश्चिमां तु समासीनो मलं हन्ति दिवाकृतम्॥५॥

नानुतिष्ठति यः पूर्वां नोपास्ते यश्च पश्चिमाम्।

स शूद्रवद् बहिष्कार्यः सर्वस्माद् द्विजकर्मणः॥६॥

सूतक मरण में भी सन्ध्या न करे विपरीत लिङ्गपुराण पद्मपुराण में कहीं कहीं पाया है सतकों लिख कर निश्चित किया है कि सन्ध्या करना न [illegible] भी मिलते हैं पर इसका निचोड़ यही है कि दूसरी सन्ध्या न करते हुए शुद्ध मानसिक सन्ध्या करे [illegible] में इसलिये यह बात को निचोड़ किया गया है कि।

सूतके मृतके कुर्यात्, प्राणायाममन्त्रकम्।
तथा मार्जनमन्त्रांस्तु, मनसोच्चार्य मार्जयेत्॥१॥
गायत्रीं सम्यगुच्चार्य, सूर्यायार्घ्यं निवेदयेत्
मार्जनन्तु न वा कार्यं, उपस्थानं न चैव हि॥२॥
उपस्थान करना सूतक मरणमें निषेधित है
प्रणवस्य ऋषिर्ब्रह्मा, गायत्री छन्द एव च।
देवोऽग्निः सर्वकर्मसु, विनियोगः प्रकीर्तितः॥३॥
ओंकारं पूर्वमुच्चार्य, भूर्भुवः स्वस्ततः परम्॥
गायत्री प्रणवश्चान्ते, जपे चैवमुदाहृतम्॥४॥
अब सन्ध्या विना ब्राह्मण हुआ भी कालिक नमनं मलिन होते
मनुः। यथा काष्ठमयो हस्ती, यथा चर्ममयो मृगः।
यश्च विप्रोऽनधीयानो, त्रयस्ते नाम बिभ्रति॥१॥
यथा षण्ढोऽफलो स्त्रीषु, यथा गौर्गवि चाफला।
यथा चाज्ञेऽफलं दानं, तथा विप्रोऽनृचोऽफलः॥२॥
वेदस्मृत्युदितं धर्मं, मनुतिष्ठन् हि मानवः।
इह कीर्तिमवाप्नोति, प्रेत्य चानुत्तमं सुखम्॥३॥
श्रुतिस्तु वेदो विज्ञेयो, धर्मशास्त्रं तु वै स्मृतिः
ते सर्वार्थेष्वमीमांस्ये, ताभ्यां धर्मो हि निर्बभौ॥४॥

योऽवमन्येत ते मूले हेतुशास्त्राश्रयाद्द्विजः।
स साधुभिर्बहिष्कार्यो नास्तिको वेदनिन्दकः ॥४॥
उत्पत्तिरेव विप्रस्य मूर्तिर्धर्मस्य शाश्वती।
स हि धर्मार्थमुत्पन्नो ब्रह्मभूयाय कल्पते ॥[illegible]॥

इस मनु वाक्य से स्पष्ट सिद्ध हुआ कि ब्राह्मण धर्मोपदेश करने के ही लिये तथा विद्या प्रचार करने के ही लिये संसार में भेजे गये हैं। अतः तुलसीदास ने भी अपने रामायण में इनको मोहजनित भ्रम नाशक कहा है देखिये यथा। बंदौं प्रथम महीसुर चरना।

मोह जनित संशय सब हरना ॥१॥

परन्तु इनकी दशा आज निरखते हुये मैथिलीशरण गुप्त जी बतलाते हैं

उन अग्रजन्मा ब्राह्मणों की हीनता तो देखलो।
भूदेव थे जो आज उनकी दीनता तो देखलो ॥
जो ब्रह्म मूर्ति यथार्थ थे अब मूढ़ जड़ता पर हुये।
जो धीर थे देखो वही भिक्षार्थ वनवनी खड़े हुये ॥
वह वेद का पढ़ना पढ़ाना अब न उनमें दीखता।
वह धर्म का आचरण करना कौन उनसे सीखता ॥
वह वेद को ही आज उनमें ध्यान देना रह गया।

है कम उन में किसी अवहेलना रह गया
गुरुओं पर जो भार था कि फिर ते भगवान [illegible]।
परमात्मा पकड़ा और रख रहस्य रचिता में [illegible]॥
सर्वज्ञ तक भी प्रभु के गा पाना कह सकते नहीं।
तो यह रहस्य पाद पंकज किन्तु रह सकते न हैं॥
सदा हैं गगन समाये मन ज्ञ वते मौन ने।
है ओं नमः शिवाय ! निर्मल रस बाहर तेज मौन ने॥
निश्चित दर्शन कर के जीन हैं भगवान में।
मा दा ति शान्ति मग्न मुख देखते हैं ध्यान में॥
जिन श्रावकों ने लोभ को त्याग तीर्थंकर [illegible] किया
देखो उन्ही केवल प्रजो को आत्मा से मत लिया॥
अब [illegible] उन की दृष्टि शा [illegible] ने निर्णय कर दिये।
फिर निज तेज उन से नाम [illegible] लिये॥
भगवान उन का आत्मे केवल दर्शन प्रमाण में।
अपने [illegible] ते जब है शोभता है [illegible] में॥
वे भव्य मन पवित्र होते हैं [illegible] अज्ञान में।
आते रहे हैं किन्तु फिर भी न प्राप्ते भगवान में॥
सब साथ जिन के पुनर्जन्म ने भव परणीत न किया।

इस लोक की परलोक की सुधनावलो को दुख दिलेगा ॥
लगि गये लो आगे मैं से ही रस्कूतहे रहे ।
लोगर तको वन-न दान पान जीते हुये मत हार रहे हैं
इसका रस-कार्य अधिकता निकले इनकी पे दुर्दशा होती है

कविता

ये सब अंग्रेजों के कुकर्म हैं नाम है जिनका यहाँ ।
अन्याय विदेशी राज का नाम है। आजाद हैं सारे कहाँ ॥
सिकार है हम लोग सबके भारत माँ का आज भी ।
लौटकर हम नहीं अन्त में जो आ सके हम चैन से भी ॥
हा! कैसे ही कहाँ देख सकें सुखी फिर हैं नहीं ।
हा! चाहें कुछ भी तो कर सकें हम तो फिर भी सब कहीं ॥
हा भारत भारत जो कभी गुलामी से मुक्त रहे ।
करते प्रयत्न में भारत सन्तान अपने देश हो ॥
हाय अतीत की शिक्षा है हम जिसका भार ढो रहे ।
हा! स्वराज्य की आशा मन से लिये भारत रस में मगन रहे ।
देश में हम सब काम से भूमि का उद्धार क्या हो जाता नहीं ।
हम परतन्त्रता का भार क्या अब तक क्या होगा नहीं ॥
शिक्षा लेना अब देखलो, हम दुखी लोग दास हैं ।

हैं मनुज हम किन्तु रहते दनुजता के साथ हैं।।
[illegible] में सदा सहचर हमारे चार हैं।
व्यभिचार अत्याचार हैं [illegible] हैं।।
हा! [illegible] से आज हम [illegible] हैं।
ऐसे विपन्न हुए कि [illegible] भांति मरणासन्न हैं।।
हम ठोकरें खाते हुए भी होश में आते नहीं।
जड़ होगए ऐसे कि कुछ भी जोश में आते नहीं।।
हा! हा! जो आग [illegible] थे जिन के पूर्व [illegible]
दधीचि [illegible] थे जिन के [illegible]
आकाश मंडल में [illegible] विभूषित [illegible]
उनकी [illegible] हमारे [illegible]
देखना [illegible]
और [illegible] और हम भान ही [illegible] हैं
[illegible] भृगु ने [illegible]
जिन जातियों [illegible] हैं [illegible]
[illegible] दिया है। श्लोक
न [illegible]
[illegible] ॥१॥

सनातन धर्मोपदेशक पं. भीमसेन शर्मा रचित भारत की दुर्दशा

✓ उठो जी नींद के माते हमारी अब दशा देखो।
प्रथम सब इस देश में आये। हमीं श्रुति गाते आये।
हमीं [illegible] राजक हलाये। हमारी अब दशा देखो॥
सभी देशों को वेद पढ़ाते थे। पशुः का नाश करते थे।
हो अब भिखारी न वहीं पाते हमारी अब दशा देखो।
हमीं ने शस्त्रास्त्र के बनाए। जहाजों के हमीं कर्ता॥
हमीं शीशों दर्पण ते। हमारी अब दशा देखो॥
कला विद्या को पढ़ते थे। विमानों को बनाते थे॥
उड़ा आकाश में जाते। हमारी अब दशा देखो॥
हमारे पास [illegible] थे। हमीं [illegible]।
[illegible] आज [illegible] हमारी अब दशा देखो॥

सकल तिला से भूषित तनो। सकल कुतिगां से रजित गे।

जगद् विख्यात कहलाते। हमारि मन देखा देखो॥

सुनें गजराज महाराजा। कि आपे हार छिनराना॥

तिंहा तन छोड़ कर धाते। हमारि मन देखा देखो॥

प्रथम भूपान देते थे। तो कुन उसन्तोन लेते थे/

सो अब तो भी खान हीं पाते। हमारि मन देखा देखो

निमन्त्रण को जो सुचि पाते। तो धार के नाज विराजें॥

दौड़ दरवाजे पर लेने आते। हमारि मन देखा देखो

सुनो जी सेठ धनवानो। सुनो जी साहुकार वानों॥

उन्हे अन्न वस्त्र के नाते। हमारि मन देखा देखो॥

हा कहां गये वे निमन्त्रण [illegible] भीत लपालपाते हो

ते थे जो भी राजे निहारे रूपे अन्न को खाकर सन्तोष से रहते

उन्हे भगवान को महा दु खित सम भते थे उनकी सन्तान तो महा दुःखी

श्लोक

शब्दकी शब्द मात्रे तो, किं पूरं तो अनगनाय।

धान तो ब्राह्मणा: सर्वे, स शब्द त्वि शब्द तिः॥१॥

बड़ा ही दुःख होता है जिस जगह देखिये [illegible] जाती जो लोगों

बतलाते हैं और उनको है। श्री महाराज देखो सभी

श्लोक:

विप्राः शूद्रसमाचाराः, सन्ध्यास्नान न वर्जिताः।
शूद्रान्नभोजिनः क्रूराः, नृपजीवी रतिक्रया गताः॥

जाहन्ति धन लोभेन, स्वदारान् नीचजातिषु॥

ऐसे है उनको पालने तो दुइ ही का लिखा है।।

चौपाई

द्विज श्रुति बेचक भूप प्रजासन, कोउ नहिं मान निगम अनुशासन

विप्र निरक्षर लोलुप कामी। निराचार शठ वृषली स्वामी

हाथ दे आज्ञाता। तैसी पर दया आहां तू सब जाति और और

तथा सत्य में भी उन्ही नहीं तैसी ऐसी दशा। औरत की ताबतो गणना श्लोक

अगजाः नबत्वधानि, स्थावराः नदानिशांति।
कृमयो द्विजस्थानि, पक्षिणां दशान्तकाः॥१॥
तीश्यंतत्र भांति पश्चात् ह्युतुरक्षदाणि मानवाः॥

पर इन सब में श्रेष्ठ तो ब्राह्मण को ही मनुष्य गणना में लिखा है श्लोक

भूतानां प्राणिनः श्रेष्ठः, प्राणिनां बुद्धिजीविनः।
बुद्धिमत्सु नराः श्रेष्ठ, नरेषु ब्राह्मणाः स्मृताः॥१॥
ब्राह्मणेषु च विद्वांसः, विद्वत्सु कृतबुद्धयः।
कृतबुद्धिषु कर्तारः, कर्तृषु ब्रह्मवेदिनः॥१॥

!

पर दुःख है कि वे लोभ त्याग से न खिलते [illegible] परन्तु [illegible]

परमेश्वर के भजन [illegible] [illegible] समझ लोभ

लोभ जितना [illegible] है। इसलिये कृष्ण अर्जुन को बतलाते हैं

त्रिविधं नरकस्येदं, द्वारं नाशनमात्मनः

कामः क्रोधस्तथा लोभस्तस्मादेतत्त्रयं त्यजेत् ॥

आनन्द से संतोष [illegible] है वह लोभ को त्यागे।

आनन्दकन्द भगवान श्री कृष्ण चन्द्र ने गीता में अर्जुन से कहा है

शमो दमः तपः शौचं क्षान्तिरार्जवमेव च।

ज्ञान विज्ञान मास्तिक्यं, ब्रह्म कर्म स्वभावजम् ॥

सन्ध्या स्नानं जपो होमो देवतानां च पूजनम्।

आतिथ्यं वैश्वदेवं च, षट् कर्माणि दिने दिने ॥ ब्राह्मण के छः कर्म हैं

अर्थात् (अध्यापनं, अध्ययनं, यजनं याजनं तथा

दानं प्रतिग्रहश्चैव षट्कर्माण्यग्रजन्मनः

शास्त्रों में कहा जाता है कि ब्रह्मा जी ने सृष्टि के [illegible] मुख से

भिन्न २ जाति पैदा कर उनके लिये पृथक् कर्म भी बना दिये थे

मुख बाहू रूपज्जानां, पृथक्कर्माण्यकल्पयत। मनुः १। ८७

शुक्ल यजुर्वेद के ३१वें अध्याय के ११वें मन्त्र में लिखा है कि

ब्राह्मणोऽस्य मुखमासीत्, बाहू राजन्यः कृतः।

ऊरू तदस्य यद्वैश्यः, पद्भ्यां शूद्रोऽजायत ॥११॥

धृति के ऊपर महाराज युधिष्ठिर को भीष्म पितामह का उपदेश। श्लोक

पुत्रदारैः सुखैश्चैव, वियुक्तस्य धनेन वा।
मग्नस्य व्यसने कृच्छ्रे, धृतिः श्रेयस्करी नृप ॥१॥

हे युधिष्ठिर स्त्री पुत्र धन आदिकों के सुख से रहित होने पर और धन के अभाव में कठिन से कठिन आपत्ति में पड़े हुये पुरुष को धैर्य ही शान्ति और सुख का देने वाला है [illegible] परन्तु [illegible] धर्म का उपदेश आता है [illegible] जरा [illegible] देखिये वृहस्पति जी ने क्षमा का लक्षण क्या किया है—

वाक्सेना [illegible] चैव, दुःखे [illegible] कश्चित।
न कुप्यति न चाहन्ति, साधुमापदि कीर्तिता ॥१॥

[illegible] के लिये [illegible] इत्यादि जाते हैं इस का उदाहरण महारानी द्रौपदी जी हैं अश्वत्थामा के ऊपर महाभारत के लड़ाई में कितना क्षमा किया है विदित है [illegible] प्रमाण

मा गृधः कस्य स्विद्धनम् किसी के धन लेने की इच्छा न करो और [illegible] म०। अद्भिर्गात्राणि शुद्ध्यन्ति मनः सत्येन शुद्ध्यति।
विद्यातपोभ्यां भूतात्मा, बुद्धिर्ज्ञानेन शुद्ध्यति ॥१॥
क्षान्त्या शुद्ध्यन्ति विद्वांसो, दानेनाकार्यकारिणः ॥

प्रच्छन्न ता पा अ तो न , [illegible] ॥३३॥

मनो मैं श्रद्धे [illegible] नदी [illegible] शं दुष्यति।

इअसा की मनो [illegible] लेन [illegible] ॥३३॥

क्षमा रूपी तलवार जिसके कर गत नहीं है उसे कोई

क्या ही क्या सकता है देखिये (पद मा खपद् और रूप्

दुर्जनः किं करिष्यति। अतृणे पतितो वह्निः स्वयमेवोपशाम्यति

ठीक है इसमें कोई संशय नहीं है क्योंकि इसे समाधान [illegible] होती ॥

बारे [illegible] निष्पाक्षा मा [illegible] ते पट-

[illegible] भाम [illegible] पूः पर पाति [illegible]

[illegible]

[illegible] जिनमे [illegible] आजी [illegible]

[illegible] जानते थे और [illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible] जानते हो [illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

इसतरह श्याउअरतें ते मोकै ऐसा हनुपदेश महवियों दियाौं है

तें केवल बोलन के गाहरणोन ताको। कापहार कापालपकोंखोजिए।

पापनालि गाहरणतीनि पनं अगाम। तचोतमापरदामातेंनकुमोनै।।

जैसे है कि हरि कविने भी ता। कहा है। दोहा ।।

सुरनारी वैनी दृरी। ता हैन नाती अंग।

राधा के रसराहै रमा के नरनारी के संग।।

वडे २ कवनतों वाते परमातें नविनहोवे के आदुरा मित्र कुमति

ओपासन हिंदुनें

आनन्दी कैद रहा है राम स्या कुल लमेत विनपडुवा

अनुभव पूरे से कहने के आशा ना तीके ममने पूछा नयोहट

देकर मारा भौरता। भी देखने पट वो उन्हर तमने दियाोहि

अनुभव पूअगिनी सुनाया। अनुशरक पेद नासमकारो।।

इन्हें गुरु बिलि कि नीके औरहि। लाहि पथेकुद पावन होहि।।२।।

जैसे ऐसा ही अनुशासन समाधानमें भी लिखा है। श्लोक,

१

द्रौपदी के चीर हरण के कारण ही दुर्योधन [illegible] [illegible] –
भोगा [illegible] है ऐसे [illegible] [illegible] [illegible] –
था इत्यादि कितने ही भक्तजन [illegible] [illegible]।
प्राचीन और नवीन लोगों को [illegible] में कैसे [illegible] भी [illegible]
है इसको इस भजन द्वारा [illegible] करेंगे ।।

(भजन)

[illegible] की प्रीति भी अज़ीन होती है अन [illegible] महाँ [illegible]

कुछ विचार करेंगे। [illegible] (सवैया)

[illegible] दरी है

[illegible] आ गन जानत [illegible] हैं

[illegible] नधि [illegible] है

[illegible] के भीत [illegible] प्रीति कहं [illegible] ती है

बाजेनक [illegible] बाजेनक [illegible]

[illegible] रहिये।

बाजेनक [illegible] कौन बाजेनक [illegible]

को [illegible] विचार रहिये॥

बाजे [illegible] बाजेवाक

[illegible] रहिंते।

बाजेनक [illegible] महनारें पै॥

बाजेनक [illegible] रहिये।

पै [illegible] न [illegible] हरि नाम [illegible]

[illegible] रहि [illegible]

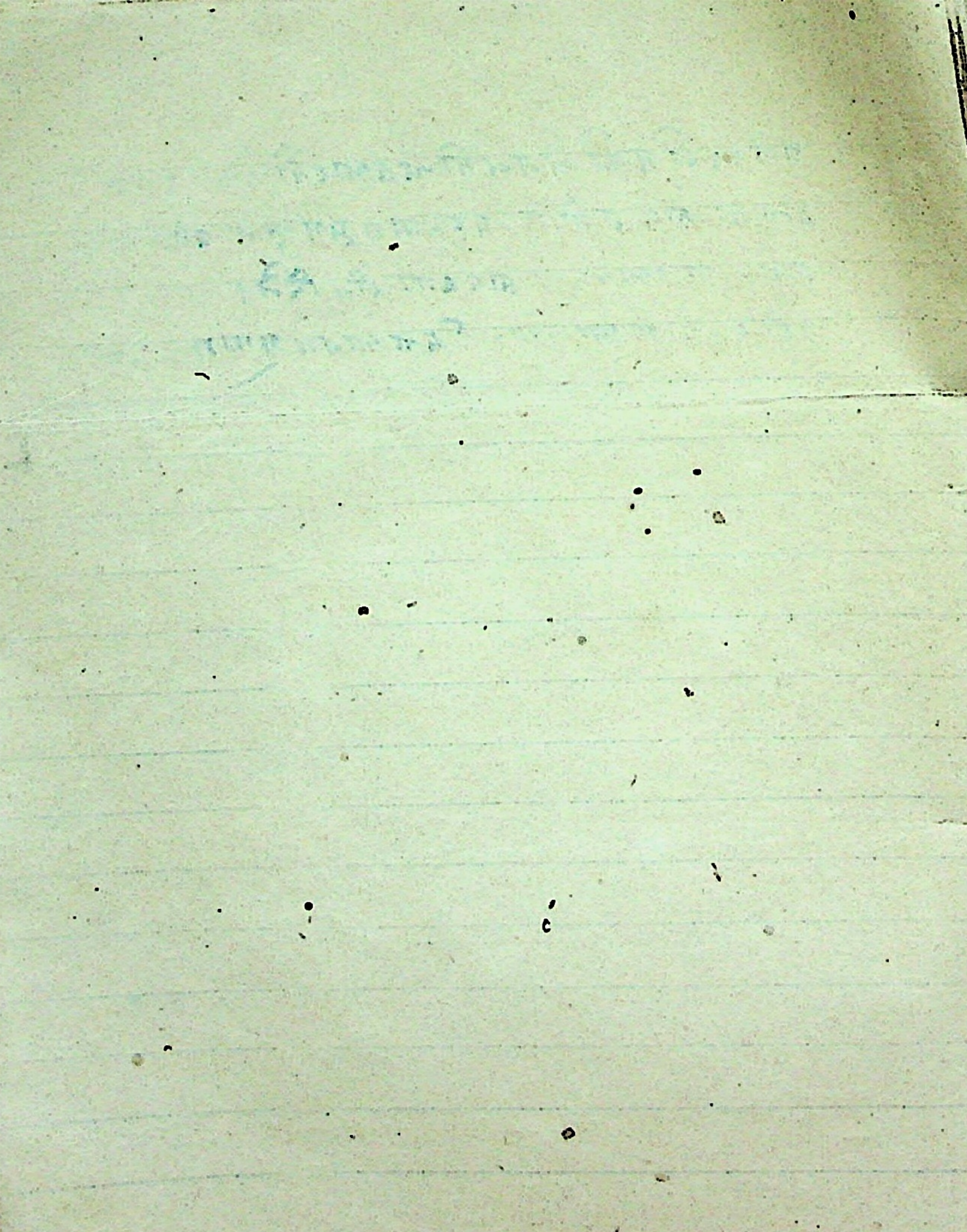
[illegible] ॥

[illegible] ॥

प्रतिपद्श्रि मष्टी·चनवमी·च तथारवौ ॥
दन्तानां काष्ठ संयोगे· दहत्यासप्तम कुलं ॥२॥
[illegible] तथा [illegible] श्राद्धस्थां रवि दिने।
प्रति पद्यादि पाद्यां · नकुर्यात् दन्त धावनम् ॥७॥

सब [illegible] ता और उसी [illegible] [illegible] [illegible] और उस पर [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] है।

[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]



मनुष्य प्रतिकूल कार्यों को सहन करता है यह मनोयोग से

दूसरे से भी इसी प्रकार कहते हैं

आनन्दं न सम प्राप्नोति [illegible] न संतोषात् ।

[illegible] प्रतिदानात् तपसा [illegible] ।

[illegible] निर्भयं [illegible] ।

[illegible] ॥१॥

[illegible] नीति

[illegible] ,

[illegible] ।

[illegible] ।

[illegible] ॥१॥

[illegible] और [illegible]

[illegible] मोदते ॥

[illegible] ॥

[illegible]

[illegible] ।

[illegible]

[illegible] ।

मोपाः स्थानं रमिं कान्ति, किं माधव पा मतः परम ॥२॥
[illegible] सपूर्व में भागे, आनन्द नचति पद गते,
[illegible] गीत मुख नामो [illegible], सनाति र परमोदते ॥३॥

[illegible] समुदायन रजनीन दिनान दिनकरः सहसम स्नान्दा इचार
[illegible] ललिते न्द्रवनध्यार प्रभुने, पदादि गन्त निधा ललितनमिनि,
नद दृष्टो गत नरेरग मालिअ मे रजनीन दिनान दिनकरः ॥१॥ पंडित
मुख जानं अगदन भुत मनोहर, निज मुख सा विलोकना पद्मोदना ॥
सम पद [illegible] मानन पात्र पा, नरजनीन दिनान दिनकरः ॥२॥ पानी
पद रिवादनु नेन्द्र विदारतां कृत महोनित्य दाम दगा जनः ॥
न [illegible] नवमोनन मोगणः नरजनीन दिनान दिनकरः ॥३॥ पुनः
रति [illegible] वदिमानक मभुनं निज पातिः प्रति गजन पोध्दे ॥
प्रपतने मरनेन [illegible] डुमतां, नरजनीन दिनान दिनकरः ॥४॥ [illegible]
आम मार स्रे प्रतिदलनाना सार महीपतेः ॥
पानो विन मिती पैन, मुकृतं तैनं तवेतं ॥१॥
पदे ति वृत्ति कौ माटी, अरत्वां नैन गच्छति ॥
[illegible] कथं नैन ब्रात जानति कृति ॥२॥
[illegible] तिवृति कौमारी, वारत्वां नैन गच्छति ॥

[illegible] [illegible] कमात्मेन • भानु मनी नितन [illegible] ॥३॥

[illegible] दास [illegible] र्भे श्रुक स्मिन् वर्न रागि मण्डनम ॥

गदिभो मन हि [illegible] को • • तामित पर्व लिरि मण्डनम ॥४॥

अथ भस्यस भस्या [illegible] • भो इ मानुप मस्पत: ॥

[illegible] का [illegible] : मती हूं दि • • [illegible] हीनी मुल नि [illegible] •

[illegible] दिनि [illegible] म सौ भ्रुपत [illegible] तेऽजुना [illegible] •

[illegible] ते [illegible] न भ्रूप सार [illegible] से [illegible] श्रौते दि [illegible] पगि • •

[illegible] मुन्दे निनो दम नक भ्रवे [illegible] इ प्रकृ [illegible] ॥

[illegible] श्रौ [illegible] मुता सभुदनन पा • सं [illegible] न: ॥१॥

बा पा दे [illegible] न पि [illegible] धे [illegible] पपा [illegible] नं प्रप्य •

[illegible] मः न [illegible] मुंन विदिता • म [illegible] नाह [illegible] नाहा • •

[illegible] मुनन मधर • [illegible] कर प्रन [illegible] ती • •

[illegible] ती ताता श्रत मख भुप्रयो • [illegible] नद मनी अ: ॥ २॥

[illegible] कमा [illegible] गाना म म णित [illegible] न [illegible] ।

[illegible] ता [illegible] न [illegible] : मन गा शोते ॥

[illegible] निपदै: [illegible] रा [illegible] क: • सिता [illegible] :

म दा [illegible] म [illegible] सांमति [illegible] न [illegible] •

[illegible] मीना नीन [illegible] दो [illegible] सित [illegible] नो [illegible] मण्डन [illegible] ॥३॥

कौशल्या तम नाल मीत: सीतान्नतानिर्जितः ।

शिरः पक्षि दमेन मानुज मद्र ब्रातना मि मिश्र नानीत: ॥

सं स्मान् दिनित नवाट न न र धामासि नानन्द स्त ॥

गुणार्द ना हि त शल्कनामि कुल त श्रीराम कलाद्रमः ॥ ४ ॥

स्वसौ रना गन मर्व हृ वदं निभो किं दं मतां मेदिनीम ।

कामाना ममनिक्रम मैव दं दतं म ही मं म गा ॥

माद हि नु ग्राम कुतो हृदि रघु पानं किम स्माःपदं ॥

इत्थं सोप लिना चिन: श्रान महत्तो ना पादवं सतेनामन: ॥ ५ ॥

नरला नु लि का शिलिका: नादि सीता मत

अदि लिलि नव गुरुलं गुरत पा । इति न नानानाति पूर्वनिपातिमौ ।

वन्द हना न गुरुना सन सि लिले का भ्रम सुलाकाव द द द गुलिके ना ॥

सदान्नयी भव

सेयं तनो महान दल कः कालेकनदापद: ।

देव लोगान कनं नाशि । धामाने न निना बिलमा ॥

कौशा गुणितागुवन कुसेदि नीते कु र श्रीनागन सिं

कु देव मा सां न कृत: कुलीन ता ।

कुमेदिनीं वायकुलोग दे गुरव ॥

कु श्रीनामनाम वन कुता पद्म:

कु पुण्य गुनाव कुलो मनानतिः ॥ ९ ॥

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible] आत्मिक ज्ञान होता है उस समय [illegible]

इसका अनात्मिक भाव तो होता है [illegible]

[illegible]

[illegible] ॥

[illegible]

[illegible] ॥

[illegible] ॥

उस समय उस मन [illegible]

[illegible]

[illegible] हमारे [illegible] में [illegible]

हमारी [illegible]

[illegible]

तुलसीदास के संस्कृत साहित्य से गृहीत भावों का दिग्दर्शन

जननी यौवन विटप कुठारू ॥ तुलसीदास

मातुः केवलमेव यौवनवनच्छेदे कुठारा वयं भर्तृहरि

सहसा करि पाछे पछिताहीं ॥

सहसा विदधीत न क्रियामविवेकः परमापदां पदम् किरातार्जुनीय

भलेहि निगम गुण सहित नाना ॥

सदा नाथ समुत्पन्ने ... पंडिता ...

... हीं निवारन ... ॥ कर्म दोष न पश्यति ... जानीते

कर्म विवश दुःख सुख छति लाहू ॥

अवश्यमेव भोक्तव्यं कृतं कर्म शुभाशुभम् ॥ ...

तेहि ... जानीते

संसार स्वप्नवत् ... सिन्धु ...

... कठिन ... जाना । संत ... कठोरा ॥

सेना ... भगवन्त ... :

... ॥

... द्रोह ...

पुनः पुनः ... तस्मात् क्रोध ... ॥ ...

... ॥

... । ... (क ...)

[illegible]

[illegible] सरस्वती देवी ॥१॥

[illegible]

काम क्रोध मद मान न मोहा, लोभ न छोभ न राग न द्रोहा।

जिन्ह के कपट दंभ नहिं माया, तिन्ह के हृदय बसहु रघुराया ॥२॥

[illegible] तिन्ह के हृदय बसहु रघुराई ॥३॥

अध्यात्म रामायण में भी ऐसा ही है

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible] ॥३॥

[illegible]

[illegible] ॥४॥

[illegible]

[illegible]

[illegible] ॥५॥

[illegible] ॥

इति [illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

१० [illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]नें भी पढ़ने वाले लोगों की दुर्दशा और उनके मालिकों के व्यवहार।

है तिन [illegible] मैं नहिं [illegible]।

[illegible] हो॥

[illegible] जानवे।

नहिं [illegible] मेरे [illegible]॥

दौड़े [illegible] खाने कोने, वह [illegible] पकड़ा गया।

[illegible] रह गया॥

[illegible] पकड़ा [illegible]।

[illegible]॥

[illegible] करते था।

[illegible] करदीया॥

[illegible] होने को है।

हनूमान के [illegible] होने को है॥

[illegible] के यहाँ के [illegible] कहीं भी [illegible]।

[illegible] सभी [illegible]॥

[illegible] देते नहीं [illegible]

[illegible]

भगवान! [illegible]।

[illegible] कभी नहीं [illegible] हनूमान में [illegible]

यदि [illegible] नहीं । [illegible] ।

[illegible]

[illegible] ।

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible])

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

दुर्लभं मानुषं जन्म, तदप्यध्रुवमर्थदम् ॥२॥

कामार्थौ नित्यमानस्य, धर्ममेवादितश्चरेत् ।

नहिं धर्मादृते किञ्चिद्, प्राप्यइति मे मतिः ॥३॥

निपानमिव मण्डूका, सरः पूर्णमिवाण्डजाः ।

शुभकर्माणमायान्ति, विवशाः सर्वसम्पदः ॥४॥

श्रुतिस्मृत्युदितं धर्मं, मनुतिष्ठन् हि मानवः ।

इह कीर्तिमवाप्नोति, प्रेत्य चानुत्तमं सुखम् ॥५॥

तस्माद्धर्मं सहायार्थं, नित्यं संचिनुयाच्छनैः ।

धर्मेण हि सहायेन, तमस्तरति दुस्तरम् ॥६॥

बाल एव चरेद्धर्मं, मनित्यं जीवनं यतः ।

फलानामिव पक्वानां, शश्वत् पतनतो भयम् ॥७॥

न कामान्न च संरम्भा न्नोद्वेगाद्धर्ममुत्सृजेत् ।

धर्मश्च परलोके, इहैव चाश्रयः सताम् ॥८॥

यजुर्वेदे (इदं सत्यं सर्वशक्तिमित्पुण्यप्रदं तात महाविशिष्टम् ।

न जातु कामान्न भयान्न लोभाद्धर्मं जह्याज्जीवितस्यापि हेतोः ॥९॥

धर्मस्य तत्त्वं निहितं गुहायां

देवा न जानन्ति कुतो मनुष्याः ॥

धृतिः क्षमा दमोऽस्तेयं, शौचमिन्द्रियनिग्रहः ।

धीर्विद्या सत्यमक्रोधो ॥ दशकं धर्मलक्षणम् ॥१॥

इस प्रकार से महर्षियों ने धर्म की व्याख्या व्याख्या की है

अब स्त्री धर्म की व्याख्या तथा किस दशा में किस प्रकार से रहना

चाहिये इत्यादि बातें विष्णु संहितातथा धर्मशास्त्रों से संग्रहीत करते हैं

विष्णु संहिता या विष्णु वाक्यम

भर्तरि प्रवासितेऽप्रतिकर्म क्रिया परगृहेष्वनभिगमनम द्वारदेश गवाक्षे-

ष्वनावस्थानं सर्वकर्म स्वतन्त्रता बाल्या यौवन- वृद्धेष्वपि पित्

भर्तृ पुत्राधीनता मृते भर्तरि ब्रह्मचर्यं तदन्वारोहणं वा, ॥

नास्ति स्त्रीणां पृथक् यज्ञो, न व्रतं नाप्युपोषणम् ॥

पतिं शुश्रूषते यत्तु तेन स्वर्गे महीयते ॥१॥

पत्यौ जीवति या नारी, उपोष्य व्रतमाचरेत ॥

आयुः सा हरते भर्तुर्नरकञ्चैव गच्छति ॥२॥

मृत भर्तरि साध्वी स्त्री, ब्रह्मचर्ये व्यवस्थिता ॥

स्वर्गं गच्छत्यपुत्रापि, यथा ते ब्रह्मचारिणः ॥३॥

वृहस्पति संहितायां

सुभाषितं परं धर्मं, नारीणां नय सत्तम।

शीलभंगेन नारीणां, यमलोकः सुदारुणः ॥१॥

मृते जीवति वा पत्यौ, या नान्यमुपगच्छति।

नास्ति स्त्रीणां पृथक् यज्ञो, नास्ति स्त्रीणां पृथक् क्रिया॥

पतिं शुश्रूषते येन तेन, स्वर्गे महीयते ॥१॥

यस्य पत्नी भवेत् साध्वी, पतिव्रत परायणा॥

कुं पत्नो सवतैगां ति, इक्का पातेव्रतं शह

अतः पतिव्रताओं के ऊपर अनुक्रम भजन गाए हैं

भजन

ओ नारी हो लग में तासतुम, इक पतिव्रत धर्म निभाओ।

पतिव्रत धर्म से उत्तम गहना, नहीं दूसरा जग में रहना॥

ओ नारी हो इसको पहना॥ रहो पति की दासी तुम॥

नित आज्ञा उसकी पालो, इक॥

करो नित्य केवल पति पूजा, नारी के लिये देव न दूजा॥

अन्य देव सेवा है बेजा॥ करो पति सेवा सतुम॥

नारायण यश पढ़ाओ॥ इक पतिव्रत धर्म निभाओ

नारी धर्म नहीं दूसरा देखा, नारि धर्म केवल पति सेवा॥

ओ नारी मानो तुम यह मेरा॥ हो जाने कमो तेरा सतुम॥

तन मन धारा कल पालो॥ इक॥

रामो ऐसो भक्त हनुमान का था, अन्य पुरुष सुन्का पड़ न साया॥
जो तुम ने यह पतिव्रत निभाया, भगवान देता सत्य राजुम॥
जब चाहो तब भजु माको ॥ टेक ॥
पीर फकीर पुजारी पण्डे, इन्होंने और भगत गुरु पड़े॥
जिन्होंने गाड़े हतों के झंडे॥ जा मोन उनके पास तुम
मत उनसे कुछ पूछाको॥ ॥ टेक ॥
भूत प्रेत चुड़ैल मसानी, काली और भ्रोत भवानी॥
इनको पूजना है नादानी॥ ना इन्हें मरीन चाहो तुम॥
ईश्वर से ध्यान लगाओ॥ टेक ॥
सीता और सावित्री नारी, द्रौपदी तारा और गान्धारी॥
सबकीं पति की आज्ञाकारी॥ पढ़ देखो इतिहास तुम॥
उन जैसा बनकर बतलाओ॥ टेक ॥
हमारा मन का दास होके, सब सेवा हम करो मन हिदे॥
वै ढेज जिस पर पाप का गोदा, पहनो ऐसा किन संगत॥
और नहाना मेंनहाओ॥ टेक पतिव्रत धर्म निभाओ॥
कमीन घर में करो लड़ाई, सास ससुर को करो लड़ाई॥
टहल करो उनकी चित लाई॥ करो न उन्हें उदास तुम॥
सावधान उन्हें रिझाओ॥ टेक ॥

गन्दे राग कभी मत गाओ, चाहों में को मत उन जाओ ॥
स्वांगत माओ में मत जाओ ॥ कभी न देखो नाच तुम ॥
इन सब बातों से दूर रहो ॥ इक पतिव्रत धर्म निभाओ ॥
सालिगराम कहे क्या कीन्हा, तुमने जनना धर्म ने दीन्हा ॥
ठगियों ने तुम्हें धोखा दीना ॥ सत को करो तलाश तुम ॥
सहम से प्रीति बढ़ाओ ॥ इक पतिव्रत धर्म निभाओ ॥

सत्य है शास्त्र में बहुत स्थानों पर है कि स्त्री को पुरुष को छोड़ कर दूसरा धर्म ही नहीं है. वे चाहे पुरुष को ही इष्ट मानते पर भागवत में वेद्या मन उन्हीं पति की सेवा करना स्त्रियों का कर्तव्य कहा है ॥ श्लोक ॥

दुःशीलो दुर्भगो वृद्धो जड़ो ॥

अतः ऐसा धर्म के करने से स्त्रियों को परमपद प्राप्त होता है
अशीला सह पति कौमुदी, सह मेघेन तडित् प्रलीयते ॥
पतिव्रता धर्म गा ॥ इति श्री ... ॥१॥

अब मांस खाने वालो उन्होंने किस तरह का भारतवर्ष में अनर्थ कर रहे हैं देखकर के मन में कष्ट होता है देखिये पी मांस के लिए क्या-क्या जाता जिस तरह उन्होंने न केन भजन में लगा था है वह ही मन से वह देख पड़ता है देखिये

भजन ॥१॥

मांसाहारी लोगों ने भारत में विघ्न मचा दिये॥

गौ माता सा दुःखीन कोई॥ घी और दूध कहां से होई॥

बल विचार रिपु में खा खोई॥ दुग्ध निपट नाश करा दिये॥

दुराचारी लोगों ने॥ भारत में॥

हा! अन्नों का आदर न करते। गौरक्षा में विघ्न भी करते॥

हिंसा करने से नहीं डरते॥ सब शाक दूर भगा दिये॥

व्याभिचारी लोगों ने॥ भारत॥

जिनसे है दुनियां का पालन॥ उन्हें मार क्या सुख हो जावन॥

फंस गई प्रजा विपत के जालन। उत्तम पशु खपा दिये॥

क्या मनचारी लोगों ने॥ भारत॥

मृगा उछलते दौड़े आवें। दरियाओं में मीन नहावें॥

मोर कहां से कूक सुनावें॥ मार मार के खा दिये॥

विपदाकारी लोगों ने॥ भारत॥

कपोतों के गोल रहे ना। तीतर बटेर का तो क्या कहना॥

शुक मैना अनमोल रहे ना॥ हिरन गढ़ मिटा दिये॥

पेटार्थी लोगों ने॥ भारत॥

प्रजा भेड़ दुम्बे नहिं छोड़े, इनके होजाने हानि जग को नाड़
कहां से लाने गऊ की जोड़े । मंह जो शोक बिका दिये ॥
कीनी रक्षा हो जो गोने ॥ भारत ॥
पाठ नोल गा गाह निडोर, सहस्त्र स्यार मृग मोर बेचारे ।
गोचर वच्छ पन श्रोंने मारे । ऐसे भाल दिखाते दिये ॥
दुःख दे भारी लोगोंने ॥ भारत ॥
जब सब जन्तु निन्दा में गे, सोचोगे फिर पछताने पंगे ।
कहूं भी तब सुख नसावेंगे । सो भारत में याद दिये ।
सुनन्त रहे सा रितो जोंने ॥ भारत ॥
सत्य है अनेक क्या कहें देखिये अहिंसा के साक्षात मूर्ति
अहिंसा परमो धर्मः ,, इस धर्म के प्रतिपादक भगवान बुद्ध ने
क्या कहा है
नेतन प्रियो होति । येन पाणानि हिंसति
अहिंसा सब पाणानं ,, अरियो ति पवुच्चति ॥१॥
अर्थात वह आर्य नहीं है जो प्राणों की हिंसा करता है
जो मनुष्य अपने अपने वालकों की घात करते हैं
पश्चात उन लड़कों की क्या दशा होती है देखो कवि ने
क्या कहा है

हमारा नवीन वर्ष

सोये बहुत दिन हो चुके, हिन्दराज! अब जागो हरे।
जातीय जीवन में उमंगो [illegible] का कर संचार लागो अरे ॥
परिणाम इस आलस्य का, भीषण बना है जोर हा।
घन घोर संकट का जलद, देखो गगन में छा रहा ॥
[illegible] कुछ सिखा इस देश को, अब तो स्वपंथ कुछ सोचलो।
निज जाति पर अभिमान रख अपने हितैषी सोच लो ॥
निज धर्म भी निज नीति को पर दृढ़ [illegible] हो।
[illegible] हारे [illegible] फिर भी [illegible] हिन्दू हो ॥
[illegible] मनुज तन संयुक्त अब तो साथ दो।
गुरु ज्ञान का दर जाति को यह जान अपने हाथ लो ॥ [illegible]
[illegible] पथ हि लिखे हैं.

कुचैर्[illegible]रवयवैर्न भूष्यते ॥ कवेः

पुराणमित्येव न साधुसर्वं, न चापि काव्यं नवमित्यवद्यम् ।
सन्तः परीक्ष्यान्यतरद्भजन्ते, मूढः परप्रत्ययनेयबुद्धिः ॥ कालिदास.
तातस्य कूपोऽयमिति ब्रुवाणाः क्षारं जलं कापुरुषाः पिबन्ति ॥ [illegible]
[illegible] संकट [illegible]
[illegible] प्रभुवरः कीदृशः ॥

जो जाति और स्वदेश के हित, प्राण दान दिया नहीं ॥

जो भाइयों के हित करीं,, संग्राम घोर किया नहीं ॥

निज जाति के अपमान में जो, तेज दुःख दिया नहीं ॥

जो ना समझा कि स्वकाम का जीवन साध जो पाया नहीं ॥

और

उसे इस भारत में, पातञ्जलि सिद्ध और अंगिरा

कपिल और कणाद, गौतम ज्ञानी मुनि के वसुन्धरा ।

हरिश्चन्द्र, दधीचि रूप वलि कर्ण का जग यश है ।

देखिया सन्देश नहीं पग धर्म से जिन का टरा ।

उपदेश और धार्मिक विषय पर है

पुनः एक और जाति जाके विषय में लिख रहे हैं

और

हा अविद्या ने हमें है कैसे बदतर कर दिया

इसने तो उर मत गई गुमोद ह्रदि कि भरा ॥

स्वतन्त्रता भी छिन गई, अब धर्म कर र दिया ॥

तो भी दुश्मन बन गये, पहलू में जिन से दिया ॥

अब निज दुःख किसे सुनावें, कोई हितू न रहे हैं आगे ॥

इस जीवन की दशा में जानें, अब तो ऐसे दुखावें ॥

वृन्दावन मे अपनो दुःखाख्यान करते हुये गौ कहती है कि

सवैया

हमतो यह जानत है को जगमें अब होत नपुंसक हीन हिंदू जे ।
जोरता लोप भई धुनि साधुता भाजि गई ब्रजहीं न कुन हूजे ॥
ब्राह्मण क्षत्रिय वैश्य अधे गये प्रान रहैन सबै गये भूजे
पूजिन आशु भई इं अनाथिनि मातरि लैं जाति सौं मांशन हूज ॥१॥

धुन मोहिनी ताल कैवालो

हाय हमें कोउ नाहि सहायक
बिनु अपराध वधी जाती हम तिथि वक्र यवन मारत नाहक ॥
माखन दूध मलाई खवाकूं पालि सयान करौं इनको हम ॥
गोन छड़ उपजावत अन्न हिं हमन हिं खात कसैयन तिनिसम ॥
मारत हूं कछु मेलति नाहीं जित भेजें उत जाइ चरौं जित ॥
रोग भये वाल भानत दे इनि कौन पराध कहहु मनुजन ॥
हे हरि गौवन के प्रतिपालक माखन के चखवैया ॥
मरी जाति अब भाति भाति भारत सन्तति मैया ॥

जो मनुष्य वर्णाश्रम धर्म त्याग आचरण करता है वह नरक को जाता है प्रमाण लिखते हैं॥

लिं० पु० अ० ॥६॥

वर्णाश्रमविरुद्धं च कर्म कुर्वन्ति ये नराः॥
कर्मणा मनसा वाचा॥ निरयेषु पतन्ति ते॥१॥ ॥३०॥

११

तस्मात् सदा स्वधर्मेण। पुरुषाः मनुजेश्वर॥
त्रयाणां वर्णानां॥ धर्मं तुभ्यं कथितं मया॥२॥ ॥११॥

ब्राह्मणाः क्षत्रिया वैश्याः। शूद्राश्च धर्मतः॥
स्वधर्मनिरताः ते च॥ तथा चान्येऽन्यथा॥१॥

वर्णाश्रमं च धर्मं। शास्त्रोक्तं परंतप॥
तेषु तिष्ठन्ते विप्राः॥ स्वधर्मप्रतिनाभ्यसितं॥

॥ आ० ॥ रा० ॥ अ० ४८॥

वर्णाश्रमस्थितं धर्मं। ये च आचार वर्जिताः॥
स एव नरकं याति। यो नरः पुनः॥ ॥६॥

अ०॥ ११॥

जो लोग वर्णाश्रम त्याग हैं। वर्गेषु धर्मेषु स्थिताः॥
ब्राह्मणानां परं तुभ्यं॥ वर्णानां प्रथमोऽनघ॥
च वर्णाश्रम धर्मस्था स्थिताः। तेषां लोकः॥ ॥५॥

जगत यह तीन दिनों का खेल

राजा रंक सबै दिन तीन के औ मामा के मेल ॥

आज कि सो कों कल कि शैं को जाना है इस खेल ॥

तब क्यों से ठ रहे तू मूरख जाना मुझे अकेल ॥

आज तुम्हारा कल हमारा लेना है अब हेल ॥

क्यों न है देश हित निज तन को राखत सदा हमेल ॥

कैसे जन्म मनुज के पाये भरी जवानी केल

चलो इसको पोन पि पोर सबै विद्युत को ठेल ॥

दोहा

८८ भारत जित भारत है हरि ३ मत ति सहित मलीन ॥

दीन हीन से पाते बिन रवि सुभ गरहा गति हीन ग १ ॥

जित भारत की दीनता, तत्तहि मिम पाहन लेप ॥

ता हुं पै कहुनापि पाले साहिब तहि रमत रेप ॥ २ ॥

मछली खाने वाले सज्जनों तर संकेत

मछली के खात भौ अ पात ता दिं तानि के ते हि मछली तो धन धर्मस्याहिं नाश करै हैं ॥

मछली अताय ने (मछीन को) क हूं ताको मारि २ खाते तो तुम हई मांस मैं मति है

हम पर भभागे तो हि नाज औ न डर लागै आन के जो मारे तो तुम्हारो मुंह मारै

अबही तो नातानी क मछली भक्षो सत में न रीमनक पारे न बलापता यही मरे हैं ॥ १ ॥

मछली को रूप जब विश्वम्भर जी ने धारयौं तब तो

वह मछली का दूध पेट में न पचि है

मछली को खात औ डरात नाहिं ईश्वर से

मिलि है जब नर्क जात वहाँ यह माचि है

और मूर्ख अब हूं सचेत मत अचेत बन

जनि पम कां सीतल दूनों आग खेलाचै है

सर्व देव विदित जैसे मीन वैसे गोमांस

पुनि ईश्वर रूप खात तातें मानव कैसे पानि है

और यदु पुरुषों कर्म ऐसा नहीं जिसके करने से

ब्राह्मण शूद्र और शूद्र ब्राह्मण हो जाता है देखिये मनु भगवान

क्या बतलाते हैं

श्लोक:

शूद्रो ब्राह्मणतामेति, ब्राह्मणश्चैति शूद्रताम ॥

क्षत्रियाज्जातमेवन्तु, विद्याद्वैश्यात्तथैव च ॥ मनु:

न कुलेन न जात्या वा, क्रियाभि ब्राह्मणो भवेत ॥

चाण्डालोऽपि हि वृत्तस्थो, ब्राह्मणः स युधिष्ठिर: ॥

उपरोक्त श्लोक के वक्ता आपस्तम्ब हैं इन्होंने बतलाया है

कि जाति वा कुल वा क्रिया से ब्राह्मण नहीं होता केवल कर्म से।

हे मनुष्य यदि इस भव सागरसे पार होना चाहता है तो कामादि विकारोंका परित्याग कर उस सर्वशक्तिमान पुरुषकी भक्ति कर देख काहे में भटक रहा है अज्ञान नहीं तो क्या जानता है

(भजन)

गाफिल तू तो भव में है रैना समझो विचारा ॥१॥
सुलतान हो गये हैं,, शिर ताज का नजारा ॥ २॥
जौबन सदा रहै ना रे,, दिन थोड़े के निवासी ॥
जब मौत आन गाही ,, उसको कोन किनारा ॥ ३॥
चार खान दान खुआना, कोई संग में न जाना ॥
क्यों देख कर भुलाना ,, सब झूठ है पसारा ॥ ४॥
सुन्दर हैं देवते, भक्तों की लागी डेरे ॥
पतितों को ज्ञान देवी ,, उनका करे विनाशा ॥५॥
माया के जाल सारे, गुरु करके सहारे ॥
अज्ञान मोह छोड़ा जाता,, हरि भक्ति सहारा ॥६॥

इति भजन

सुनोजी! कोई गगन मण्डलसे आवाज होती है आ रही है ॥१॥
नैन हैं सुन्दर मनोहर सोहाती है ॥
जीवन सांझ के तारे सम हर दम है सच गहरा होते है ॥२॥

अनेक प्रकार कोतन मारे , जो कोटि कर कोई ढारा ॥

नमक की लिजन्नी के हैं मनोहर ,, गुलाब कुन्द मिल रहे हैं ॥३॥

मुकुत मोहलिन ज नाके नागिन , पानी निराजन मुखार मुरझाये ॥

तिन कि ब्यारी जगत से न्यारी , वह सब सुन्दर बिहार रहे हैं ॥४॥

त्रिकुटी लहर भव सागर कुम्भ दिखाया , मिटा लिखा सब जनम मरण का ॥

ब्रह्मानन्द सखी मोहन्दा , जो मोतमिलर केता रही हैं ॥५॥

तृतीय गान

नहिं मोहनैन क्या देखें , मुझे दिन को हि मारते हैं ॥१॥

कभी कछ रोवन जाने ,, कभी ताली ग़र्मी की ॥

निःसरका सलतनमें पवा ,, नहीं जाने आना ही है ॥२॥ नहिं मों ॥

सन सखी मोहनो मूरत , लेन दिन की प में पैरे ॥

नयन में चैन है भूप को ,, सजर तन को लेना रहै ॥३॥ नहिं मों ॥

शुमार करती हैं नहीं कोई , दगाई कीमि सोते हैं ॥

तिना ही दूर जार के सिर नहीं ले जाता है ॥४॥ नहिं मों ॥

अगर दिन दर जो मेरे , मिला कोई कभी मुझे ॥

वह ब्रह्मानन्द मनोहर कहते मैं याद मारते हैं ॥ नहिं मों ॥५॥

यहां फिर देखता कि इस प्रकार का है नया इस पार कोई जानता है इस पर

चतुर्थ गान

दृष्टितारक पग में भवनोदि न्यादि प्यार ॥१॥

दिल में प्रेम आनन्द मी मेरी प्यास बुझादि सार ॥२॥

दृढ़ता फिरताई गुरु मैं तो सदा नन्द में ॥

कौन नगर ना सत स॰ नामनताद प्यार ॥३॥

कहते हैं मुनिराज सभी निश्चय है प्रेरणा ॥

भेद को परदे कोन गुरु ॥ दिल से हटादे प्यार ॥४॥

सुनकर प्रभु वहाँ सभी ॥ गीत हैं सभी नगरों ॥

घर में ते ते ज्योत का ॥ दर्शन तो दिल ही दे प्यार ॥५॥

तेरे नहि मानो सभी ॥ वेदवचन मान करें ॥

ब्रह्मानन्द मनमें सदा ॥ ज्ञान आनन्द पावे प्यार ॥६॥

हे गुरुदेव दुख [illegible] पदारथ तो में [illegible] नहीं [illegible]

इति ब्रह्मानन्द [illegible] है

[illegible]

[illegible] मन [illegible] भजन में ॥१॥

फिरता [illegible] करता [illegible] पर [illegible] ॥

[illegible] ॥ [illegible] ॥२॥

पे [illegible] ॥ [illegible] ॥

[illegible] ॥ [illegible] ॥३॥

जीवों पर दया न करते, दिन मद भरते मरते॥
सुन हूँ ना ला गुजरते॥ मन्द रोग से जीवन में ॥४॥
गनि का मृजा मिल जाती, लवरी सदन निशानी ॥
सूरज न छी शमा ली॥ मन निश्चित रहा शरमाने में ॥५॥

गज़ल ॥ ५॥

जो दिल में मेरा नाम गाता रहेगा ॥
तो मुझ को भी तू याद आता रहेगा ॥१॥
नहीं पूरे होंगे कहीं पाँके धन्धे
तू कब तक यहां दिल लगाता रहेगा ॥२॥
यह है ज्ञान की बूटी ऐ मोमिन ॥
अगर ध्यान से इसको खाता रहेगा ॥३॥
तो भागों कामनाओं का वृद्धि का मन का ॥
मेरे पार मन रोग जाता रहेगा ॥४॥
ये मुमकिन नहीं तुझ को मैं भूल जाऊँ ॥
जो तू मुझको निर्भय मनाता रहेगा ॥५॥

भजन

[illegible] शुभ [illegible] को [illegible] ।

[illegible] अश्रेणी [illegible] पारि [illegible] ॥१॥

धीरे धीरे [illegible] होन [illegible] ।

कैंडा २ मागा [illegible] कैसा [illegible]

[illegible] को [illegible] नहै। [illegible] नहीं [illegible] तो

[illegible] धरैं पाप [illegible] ॥४॥

[illegible] जापे [illegible]

[illegible]

के [illegible] अनु [illegible] ।

[illegible]

[illegible]

[illegible] ।

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

ग़ज़ल नं० 1

शरण में आये हैं हम तुम्हारी, दया करो हे दयालु भगवन्।

सम्भालो बिगड़ी दशा हमारी ,, ,,

न हम में बल है न हम में शक्ति न हम में साधन न हम में भक्ति ॥

तुम्हारे दर के हम हैं भिखारी दया ,, ,,

जो तुम हो स्वामी तो हम हैं सेवक, जो तुम पिता हो तो हम हैं बालक।

जो तुम हो ठाकुर तो हम पुजारी ,, ,,

सुना है हम अंश हैं तुम्हारे, तुम्हीं हो सच्चे प्रभु हमारे ॥

यह है तो सुधि तुमने क्यों बिसारी दया ,, ,,

बुरे हैं जो हम तो हैं तुम्हारे भले हैं जो हम तो हैं तुम्हारे

तुम्हारे होकर हैं हम दुखारी दया ,, ,,

प्रदान कर दो महान शक्ति, भरो हमारे में ज्ञान भक्ति ।।

तभी कहाओगे ताप हारी ,, दया ,, ,,

न होगी जब तक कृपा की दृष्टि, न होगी जब तक दया की दृष्टि।

न तुम भी तब तक कहो न्याय कारी ,, दया ,, ,,

हमें तो बस टेक नाम की है, पुकार यह राधेश्याम की है।

तुम्हारी तुम जानो निर्विकारी , दया ,, ,,

गज़ल नं. २

ऐसी कृपा हो शंकर जब प्राण तन से निकलें।।
हो प्राण प्यारा कब पार जब ,, ,,
श्री गंगा जी का तट हो, और नन्दन का विटप हो।।
रजनी रहे पहर भर ,, जब ,, ,,
अँजली में गंगाजल हो ,, और मुख में तुलसीदल हो।
हर श्वास में हो हर हर ,, जब ,, ,,
व्रत की त्रयोदशी हो ,, और चन्द्रवार भी हो।
और आपका विचार ,, जब ,, ,,
दामन को जब पकड़ लूँ, तब तो न हिया पिघालूँ
गोदी में गिर पड़े शरीर ,, जब ,, ,,
परिणाम यदि यही हो, तो मुझको शान्ति हो।
यश आपका हो सुन्दर जब ,, ,,
जब तन तजा पतित ने, पावन किया क्या शिव ने।
चर्चा यही हो घर घर जब ,, ,,
है राधेश्याम अनुचर, देहान्त है या है बढ़कर!
माया फिरे न दर दर ,, जब ,, ,,

नं॰ ३ गजल ॥

यह जन का है निवेदन अब जग में जन्म होवे ॥
तेरे चरन में हो मन ॥ जब ,,

जहां ज्ञान हो घनेरा , गुण ज्ञान भी हो तेरा ॥
उस घर में हो बसेरा ,, जब ,,

पृथ्वी पे जब मैं आऊं , तुझको न भूल जाऊं ॥
तेरे ही गीत गाऊं ॥ जब ॥ ,,

माया नहीं सताये वह ज्ञान दिल में आये ॥
हरना तुही दिखाये ॥ जब ,,

जब काल की हो फेरी , छवि सामने हो तेरी ॥
मोहन यह याद मेरी ,, जब ,,

प्यारे सज्जनों पानी भी अतीव (स्तु) है इस की रक्षा मनुष्य जौहरी से जौहरी तक सब में हो परतो भी करनी चाहिये अन्यथा अकीर्तिञ्चापि भूतानि, कथयिष्यन्ति तेऽव्ययाम् ॥ सम्भावितस्य चाकीर्तिर् मरणादतिरिच्यते ॥१॥ गीता देखिये पानी हीन वस्तुओं की क्या दुर्दशा होती है एक कवि महोदय कवित्त रूप में बताते जाते हैं

कवित ॥१॥

पानी बिन मोती कोई जौहरी खरीदे नाहिं
पानी बिन सुन्दर सिरोही के हि काम की ॥
पानी बिन घोड़ा को सवार नाहिं चाहे कोई ।
पानी बिन हीरा की हू कीमत न दाम की ॥
पानी बिन सुन्दर सरोवर नहीं कोउ लगे ।
पानी बिन मान हूं महन्त नाहिं नाम को ॥
पैरे निरञ्जानी तू यतन कर पानी राख
पानी बिन गये मानी जिन्दगानी कौन काम की ॥

ऐ ईश्वर तू दुखों की दुहाई को देख कोई उनके लिये विशेष चिन्ह क्यों नहिं निरूपण करी

कवित

।। नम्बर (१९१) ।।

जमाना रङ्ग बदलता है ।।

रोज सुबह को दिन चढ़ता है शाम को सूर्य ढलकता है

आह्निक कारिका

[ब्राह्मणलक्षणम्]

शान्ताः सन्तः सुशीलाश्च ,, सर्वभूतहिते रताः ॥
क्रोधं कर्तुं न जानन्ति ,, एतद् ब्राह्मणलक्षणम् ॥१॥

सन्तोषो मानशीलश्च ,, सौम्यचित्तो दृढव्रतः ॥
समः परेषु चात्मसु ,, एतद् ब्राह्मणलक्षणम् ॥२॥

एकाहारश्च सन्तुष्टः ,, स्वल्पाशी स्वल्पमैथुनः ॥
ऋतुकालाभिगामी च ,, एतद् ब्राह्मणलक्षणम् ॥३॥

यथान्नं परवित्तस्य ,, पापिना परिवर्जयेद् ॥
अदत्तं नैव गृह्णाति ,, एतद् ब्राह्मणलक्षणम् ॥४॥

सत्यं ब्रह्म तपो ब्रह्म ,, ब्रह्म चेन्द्रियनिग्रहः ॥
सर्वभूत दया ब्रह्म ,, एतद् ब्राह्मणलक्षणम् ॥५॥

वसिष्ठः ॥

योगस्तपो दमो दानं ,, सत्यं शौचं दयाश्रुतम् ॥
विद्याविज्ञानमास्तिक्यं ,, एतद् ब्राह्मणलक्षणम् ॥६॥

अथ षोडश संस्काराणि ॥

गर्भाधानमतः पुंसवनं, सीमन्तजाताभिधः
नामाख्यं सहनिष्क्रमेण च तथा ,, अन्नप्राशनं कर्म च ॥१॥
चूडाख्यं व्रतबन्धकोऽप्यथ चतुः वेदव्रतानां चतुः
केशान्तः सविसर्गकः परिणयः ,, स्यात् षोडशी कर्मणाम् ॥२॥

प्रातः स्नान फलं (पाद्मकल्पः)

गुणा दश स्नान परस्य साधो, रूपञ्च तेजश्च बलञ्च शौचम् ।।
आयुष्यमारोग्यमलोलुपत्वं, दुःस्वप्ननाशश्च तपश्च मेधा ॥१॥
अगम्यागमनाद्यैश्च, पापैर्मुच्येत किल्बिषात् ।। (नारदः
रहस्य चरितानां पापानां मुच्यते स्नानं प्रातः ॥२॥
स्नानात्पूर्वं भक्ष्या नोशान्तदार्थाः (अशक्ता भान स्नानविधिः
इक्षु आपः फलं मूलं, पयस्ताम्बूलमौषधम् ॥ (मनुर्निःमित [illegible]
भक्षयित्वापि कर्त्तव्या, स्नान दानादिकाः क्रियाः ॥२॥

आर्द्र वस्त्रं निष्पीडनम्

निष्पीड्य स्नानं वस्त्रं तु, पश्चात्सन्ध्यां समाचरेत् ।।
अन्यथा कुरुते यस्तु, स्नानं तस्याफलं भवेत् ॥१॥

सन्ध्या फलं (अत्रिः

सन्ध्यामुपासते ये तु, सततं संशितव्रताः ।
विधूत पापास्ते यान्ति, ब्रह्मलोकं सनातनम् ॥१॥

अत्रापि भारतं श्रेष्ठं, जम्बूद्वीपे महामुने ।। (भारते वर्षे
यतो हि कर्मभूरेषा, ततोऽन्या भोगभूमयः ॥१॥ जन्म फलं
॥ ~~[illegible]~~ ॥ निःब्रह्मपुराणे
कदाचिल्लभते जन्तु, मानुष्यं पुण्यसञ्चयात् ॥
॥ [illegible] ॥

श्री[illegible] नमः

याज्ञवल्क्यः

यावन्तोऽस्यां पृथिव्यां हि विकर्मस्थास्तु वै द्विजाः॥
तेषां वै पावनार्थाय सन्ध्या सृष्टा स्वयम्भुवा॥१॥

सन्ध्या व्याख्या

अहोरात्रस्य यः सन्धिः सूर्यनक्षत्रवर्जितः (नारदेन-
सा तु सन्ध्या समाख्याता मुनिभिस्तत्त्वदर्शिभिः॥२॥

सन्ध्या कालः

सूर्योदयात्पूर्वं द्वे घटिके सन्ध्याकालः (नारदेन.
सन्ध्याकालः प्रागुदयात् त्रिमात्रादि मुहूर्तकः अग्निस्मृतौ
षट्त्रिंशद् दण्डिका चार्धं स्याद्विशोध्युत ॥१॥
निशानां वा दिवा वापि यदज्ञानकृतं भवेत्॥
त्रिकालसन्ध्याकरणात् तत्सर्वं हि प्रणश्यति॥१॥

भविष्यपुराणे॥

सितेन भस्मना कुर्यात् त्रिसन्ध्यं च त्रिपुण्ड्रकम्॥
सर्वपापविनिर्मुक्तो शिवेन सह मोदते॥१॥
स्ना[illegible]तौ च जपो होम स्वाध्यः देवादि पूजनम्॥
तस्य व्यर्थमिदं सर्वं यस्त्रिपुण्ड्रं न धारयेत्॥२॥

ॐ शान्ति पत्रेणम:

प्रातरुत्थान काल: [मनु:]

ब्राह्मे मुहूर्ते उद्बुध्येत, धर्मार्थौ चानुचिन्तयेत ॥
कायक्लेशांश्च तन्मूलान, वेदतत्त्वार्थमेव च ॥

[वेद तत्त्वार्थ ईश्वर:]

ब्राह्म मुहूर्त: [विष्णु पुराण]

रात्रे: पश्चिम यामस्य, मुहूर्तो यस्तृतीयक: ॥
स ब्राह्म इति विज्ञेयो, विहित: स प्रबोधने ॥
पञ्च पञ्च उष:काल: सप्त पञ्च अरुणोदय: ॥
अष्ट पञ्च भवेत् प्रात: ॥ तत: सूर्योदय: स्मृत: ॥

भस्म धारण फलम् ॥

श्राद्धे यज्ञे जपे होमे, वैश्वदेवे सुरार्चने ॥
धृत: त्रिपुण्ड: पूतात्मा, मृत्युं जयति मानव: ॥

शिखा बन्धन विचार:

स्नाने दाने जपे होमे, सन्ध्यायां देवतार्चने ॥
शिखा ग्रन्थिं विना कर्म, न कुर्याद् वै कदाचन: ॥१॥

शिखा शुद्धि विचार:

शौचेऽप्यश्रु शयने सङ्गे, भोजने दन्त धावने ॥
शिखा मुक्तिं सदा कुर्यात् - इत्येतन्मनुरब्रवीत ॥२॥

गायत्रीभावस्यार्थः [नागदेवः]

गायन्तं त्रायते यस्मात् तेन सा प्रोच्यते :

हान्दसा: स्मृति:

विप्रो वृक्षः मूलकान्ता च सन्ध्या वेदाः शाखा धर्मकर्माणि पत्रम्
तस्मान्मूलं यत्नतो रक्षणीयं छिन्ने मूले नैव पत्रं न शाखा ॥१॥

ॐकार प्रौढ मूलः क्रमपद सहितश्छन्द विस्तीर्ण शाखो।
ऋग्वेदः सामपुष्पो यजुरधिक फलोऽथर्वगन्धं दधानः ॥
यज्ञच्छाया समेतो द्विजमधुपगणैः सेव्यमानः प्रभाते ॥
मध्ये सायं त्रिकालं सुचरित चरितः पातु वो वेदवृक्षः ॥२॥

स्वकाले सेविता नित्यं, सन्ध्या कामदुघा भवेत्
अकाले सेविता सा च, सन्ध्या वन्ध्या वधूरिव ॥१॥

स्पर्श दोष:

दीर्घ काष्ठे शिलापृष्ठे, नौकायां शकटे तटे ॥
विवाहे बहुसम्पर्के, स्पर्श दोषो न विद्यते ॥२॥

ब्रह्मचर्य रूपी तपस्या का असीम महिमा ॥

ये तपश्चतपस्यन्ति, कौमाराः ब्रह्मचारिण:।
विद्यावेदव्रतानान्तु, दुर्गाणि सन्ति तरन्ति ते ॥१॥

ब्रह्मचर्य की परिपक्वता से क्या नहीं
सिद्ध हो सकता है

शंकराचार्य की उक्ति

सिद्धिं विन्दति महाफलं, किं न सिद्ध्यन्ति भूतले ।।
यस्य प्रसादान्महिमा ,, समाख्याता इशोभनेन ।।२।।

ब्रह्मचर्य प्रतिष्ठायां वीर्यलाभः ~~माते~~
पातञ्जल योगसूत्रे।

स्वयं कर्म करोत्यात्मा, स्वयं तत्फलमश्नुते ।।
स्वयं भ्रमति संसारे ,, स्वयं तस्माद्विमुच्यते ।।१।।

विषय की अत्यन्त तीव्रता ।।

दोषेण तीव्रो विषयः कृष्णसर्पविषादपि
विषं निहन्ति भोक्तारं ,, द्रष्टारं चक्षुषाप्ययम् ।।२।।

सत्सङ्ग से जीवन मुक्ति [शंकराचार्य]

सत्सङ्गत्वे निःसङ्गत्वं निःसङ्गत्वे निर्मोहत्वम् ।।
निर्मोहत्वे निश्चलतत्त्वं ,, निश्चलतत्त्वे जीवन्मुक्तिः ।।१।।
सत्सङ्गः परमो तीर्थः ,, सत्सङ्गः परमं पदम्
तस्मात्सर्वं परित्यज्य ,, सत्सङ्गः सततं कुरु ।।२।।

विरुद्ध भोजनसे अत्यन्त हानि: वाग्भट्ट ।।

अनारोग्यं अनायुष्यं ,, अस्वर्ग्यं चातिभोजनम् ।।
अपुण्यं लोकविद्विष्टं ,, तस्मात्तत्परिवर्जयेत् ।

दोहा

तुलसी अपने राम को, रिझ भजै चहै खीझ।।
खेत परे पर जामिहैं, उलटा सुलटा बीज।।१।।

हमारा आत्मिक बल

हम वीर की सन्तान हैं हैं वीर बनने के लिये।
यह जन्म है निज देश का उद्धार करने के लिये।।
हम सिंह सुवन सपूत हैं, यह देश कानन राज है।
यह भव्य भारत ही हमारा, स्वर्ग का सरताज है।।
हम गीदड़ों के झुण्ड से हैं मिट जाने को नहीं।
तैयार हैं सुरराज से भी आज लड़ने को कहीं।।
ऋषि मनु का अनुराग है प्रह्लाद की हरि भक्ति है।
भगवान को भुवन बनाने की हमीं में शक्ति है।।
सुन्दर स्वदेशी बाग के हम कमल कुसुम सुवास हैं।।
निज भारत प्यारे देश के हम दास हैं जन आश हैं।।

पक्षी का गमन विचार

तीनि वार सप्त नक्षत्रं पक्षिका पदा समन्वितम्।।
एकीकृत्य मुने भागं ,, ज्ञातव्यं गमनावधि।।१।।
स्थानमेके वदेद्भोगं, चंचल द्वय द्वितीयके।।

रामवे देशमवेन्मार्गे ,, पंचमे गृह मागतम ''
षष्ठे रोगो भवेत्काप्यित थूनो मृत्युर्विनिर्दिशेत ।।३।।

अन्ध योग

लग्ने राहु धने चन्द्रे '' अष्टमे भौमस्य भास्करः ''
चतुर्थे च भवेत्सौरि ,, अन्धो भवति बालकः ''

अथ वक्षस्या भौम फलम ''

चण्ड प्रताप वसुधा खिललोकपालः ।
समस्त प्रहार निपुणो धनधान्य पूर्णः ।।
रक्ता धिको रण धरः सुधरः प्रजाला ।।
लग्नः स्थिते क्षितिसुते ,, मनुजः प्रदीपः ।।१।।

दाता नहीं होतो पावकों को इस लोकपालाम -
सुन्दर शरीर होय महारण धीर होय।
वीर हो प्रभीम मोंगल रै मरत भाठोयाम को ।।
गरया गुमान होय बड़ो सावधान होय।
मान होय साहवी प्रतापी पुज्जधाम को ।।
पढत भ्रमा न जो पै मचवा मही पहोप ।
दीप होय वंश को जनै या सरल श्याम को ।।
सर्व गुणशाला होय प्रतापी विधाता होय।
दाता जो न होय तो हमारे कौन कामको ।।

भारि मनको कर्म ही ईश्वर है अतः सांख्य शास्त्र ने बतलाया है
कि कर्म ईश्वर: इसलिये मनुष्य को कर्म करना चाहिये
अतएव कोई कवि महोदय क्या कहते हैं देखिये ॥

गजल नं २

आया है कर्म युग कुछ कर्म करना सीखलो।
देशपर और जाति पर हम रे करना सीखलो ॥
मारने का नाम मत लो पहिले मरना सीखलो ॥
मिटके आपस में न दबकर फिर उभरना सीखलो ॥
पार यदि होना तुम्हें पर नन्दाता दुःख सिन्धु से ॥
तैरकर तो इक सागर से उतरना सीखलो ॥
फिर जलाना दीप सज्जन संसार को आशा मान में
देश दुःख की आग में पर पहिले जलना सीखलो ॥

मनुष्यों यदि कर्म करने में प्रवीणता प्राप्त करना किया है
यदि धर्म पथ में तन मन धन जीवन पाया था तो धर्मियों ने
अस्तु उन धर्मवीर पुरुषों की याद करना हमारा परम कर्तव्य है
देखिये   कव्वाली नं. ५१

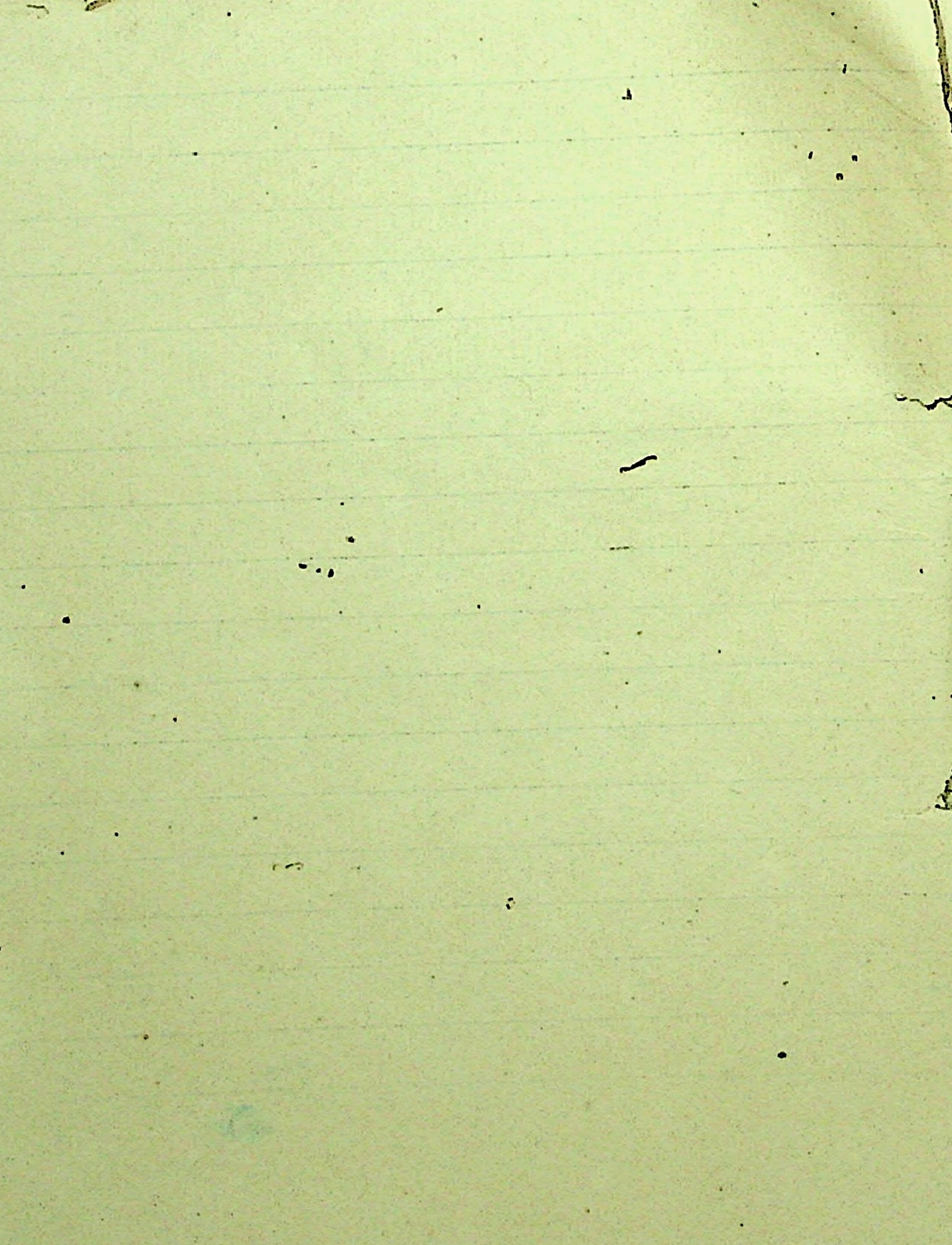
धर्मी यह कहां गये वे आली निशान वाले ॥
आकर कि धर दुवे हैं वे स्वाभिमान वाले ॥

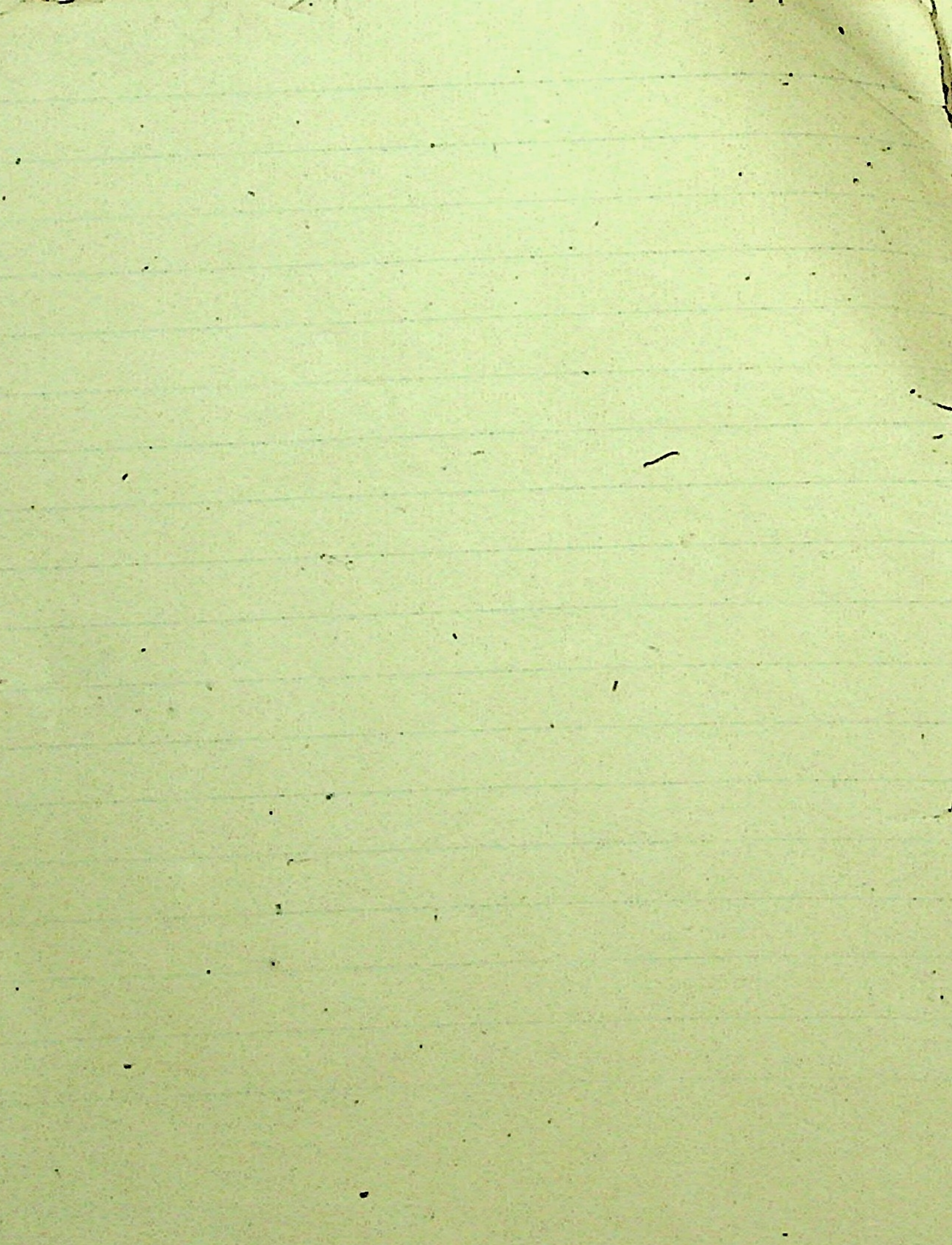
अगर युधिष्ठिर दशरथ श्रीरामचन्द्र न होता ॥
भाई भरत से त्यागी तप ज्ञान ध्यान वाले ॥
वे मोरध्वज कहां है—कहां वो नेक चलन वाले ॥
हरिश्चन्द्र से पतालीना मो गोदान वाले ॥
धर्मात्मा युधिष्ठिर भी भीमसेन भी योधा ॥
अर्जुन से शूरवीर धारी बाणों कमान वाले ॥
श्री कृष्णावतार लेकर मारा था दैत्य जिनने ।
राणा प्रताप से वा वीर शिवा कृपाण वाले ॥
हम हैं उन्हीं की सन्तां, हालत खराब खस्ता ।
जिनको कि नित उठे सब शौक तलवार वाले ॥
के से-वालों दिल को अब नीर इन्द्र मर्द ।
रो २ पुकारें कन्या जवेद गान वाले ॥
अये हिन्दुस्थानियो क्या इस सभी रोदन में भी
तुम उठकर अपनी दशा नहीं सम्भालते हो

गज़ल नं ५६

किस नींद सो रहे हैं हिन्दोस्तान वाले ॥
खन्दक में गिर पड़े हैं ऊंचे निशान वाले ॥
सनीत कहां है तो ज़ोर कहां है

दशरथ के रामन दमा वाँ नीक मान वाले ॥
नाताक़ती से तेरे आसूं बहा रहे हैं
क्या सरजु मीन वाले क्या आसमान वाले ॥
मुंह सब न खोलते हैं सर से न खेलते हैं
हाकिम के सामने हैं गुणगान वाले ॥
नेशान बिगड़ गया है खाना ख़राबियों से
बरबाद हो चुके हैं यह खानदान वाले ॥
फ़ैशन परस्त सिर हैं कपड़े विदेश के हैं
मलमल के हाथ रोते ढाके थान वाले
कै क़ौम ज़माने अनतोर सी कहाँ कौनी दे
आवाज़ दे रहे हैं देशी दुकान वाले ॥





[illegible] नों तक पुरुष पुरुष नहीं और वह देश देशमें
अलंकारों और नदियों तथा [illegible] के [illegible] को
वह [illegible] था देख वह पुरुष और वह नारि जो लिए रहे
वह [illegible] जाते हैं [illegible] दिखाते [illegible] उनपर वह
देश रक्षित [illegible] घोर अन्धकार में सोया हुआ है देखो [illegible]
सूने [illegible] ने कितना [illegible] जार कि [illegible] महान हो

(अ गान)

क्या सिकन्दर के गया, आ पार तू क्यों न आ गया॥
हम निर्बलों पर किया क्या वार, तू तो पहला गया॥
[illegible] के लिए भला तुझे, [illegible] और रहो।
[illegible] तेरा, मेरा मिट न पाया॥
होंट [illegible] हिन्द के, आगे सड़ता॥
उनके [illegible] तन पै, [illegible] था॥
[illegible] पर, [illegible] गोलियां॥
[illegible] मिल जायगा॥
[illegible] हो न हिन्दुस्ता सही॥
[illegible] भारत [illegible] मिट न पायगा॥

दिलीप [illegible]

बे खौफ जुल्म करतो, क्यूं आजाद रहन जावे ॥१॥

कुछ दिन में हरी का ॥ हर सानरहन आवे ॥२॥

अंग्रेज़ आज ज़ालिम, करदो यहां रवाना ॥

भारत के खूं के प्यासे ॥ फिर आजाद रहन जावे ॥३॥

दिन खोल करके करदो, कातिल हवाल मुल्क को ॥

कातिल में देख लेना ॥ कैद आजाद रहन जावे ॥४॥

सेना के तक पै जुल्मों, अर्ज दिन में रे प्यारे ॥

गुरकन मेरे तेरे ॥ दर आजाद रहन जावे ॥५॥

मानो अगर ने मोहन, गांधी को देश राजे ॥

देखो न इस गुमो पर ॥ आजाद रहन जावे ॥६॥

तृतीय भजन ॥

कहां छिपे हो मेरे अर्जुन भारत को मझधार रखके ॥

तेरा चला है वह भारत गले लगा लो संभाल करके ॥१॥

तुम्हारे भाइयों को डर में महिं पै डराते थे जो दुष्ट सारे ॥

आज वही दानव हाय दर हमें उड़ाते हलाल करके ॥२॥

फिर प नालों के कारण पड़ा दुष्टों को संहारा ॥

इसी तरह पंजाब में बहिनों को देखा उघार करके ॥३॥

रूप छिपे मत देर होती, सत्याग्रह को बन्द हो को ॥

निडर खड़ो कौरव की सेना इसे ढ़ाया दहल करके ॥४॥

मा० भू० को धन्यवाद नं० 3

तू धन्य की भारत की जननी हमारी ॥ तू ॥

तू मंगलागार तू सिद्धि दातार, महिमा तुम्हारी
सकल जगत न्यारी ॥१॥

तुमसे हि सहदेव पाँचो ऐसे वीर,
तिनमें था अर्जुन गजब शस्त्र धारी ॥२॥

तुम पै हुये कान्हा गिरिवर को करधारी,
सुरपति के शस्त्रों से ब्रज को उबारी ॥३॥

दशरथ से धनवान जनकादि ज्ञानी
दशरथ तनय राम संग रमा हमारी ॥४॥

हो जेल स्वर्ग से बढ़कर तेरे हित
बेड़ी की झनकार वीणा से प्यारी ॥ ५॥

गोपाल हो ज्वान तुम पे ही कुर्बान ॥
नैना लखें गे वैभव अपार तुम्हारी ॥ ६ ॥

ऐसा मैं तेरी भारत तन मन धन गायेंगे हम।

फिर स्वर्ग का [illegible] गायेंगे हम ॥१॥

[illegible] इहीने पावन किया हमारा।

[illegible] गायेंगे हम ॥२॥

तेरे नामों का तो भार, सर पर उठा भारे।

कर के पूरा न [illegible] उसको पूरा गायेंगे हम ॥३॥

तेरे लिये जी लेंगे, तेरे लिये मरेंगे ॥

तेरे ही यह [illegible] में जीवन बीतायेंगे हम ॥४॥

[illegible] हमपर निछावर हो।

[illegible] गायेंगे हम ॥५॥

तू स्वर्ग है हमारा, तू ही स्वर्ग है हमारा ॥

[illegible] गायेंगे हम ॥६॥

[illegible] मेरे [illegible] में [illegible]

[illegible] गायेंगे हम ॥७॥

जैसे [illegible] तेरा, [illegible]

[illegible] गायेंगे हम ॥८॥

[illegible] और [illegible] मारे ॥

[illegible] उनको [illegible] गायेंगे हम [illegible]

हे मानवो [illegible]

मेरा [illegible] में [illegible] [illegible]

उस ईश्वर के [illegible] [illegible]

[illegible] गान नं० ६

[illegible] में [illegible] हूँ भगवान।

देश [illegible] के लिये [illegible] मिटा दूँ भगवान॥

[illegible] भी [illegible] दे देना।

[illegible] में [illegible] को [illegible] दूँ भगवान॥

[illegible] तो [illegible] में [illegible] तो है।

[illegible] सिखा दूँ भगवान॥

कोई भी मन्दिर [illegible] में [illegible] है।

[illegible] पानी को मैं [illegible] दूँ भगवान

[illegible] कभी॥

[illegible] में [illegible] दूँ भगवान॥

[illegible] है कोई

[illegible] भी [illegible] में [illegible] दूँ भगवान॥

ग़ज़ल

नाम ज़िन्दों में लिखा जायेंगे मेरा।

नाम भारत का बचा जायेंगे मरते मरते॥

जान पर खेल के लेना पड़े [illegible] तो भी

सैकड़ों कोस से दौड़ा जायेंगे मरते मरते॥

हम न होंगे [illegible] सेना ही है।

हम तो सिर दे के [illegible] जायेंगे मरते मरते॥

यह कोई और है जो [illegible] मरते॥

[illegible] दौड़ा जायेंगे मरते मरते॥

खाक में मिल [illegible] मिलना होगा।

दुश्मनों [illegible] को दिखा जायेंगे मरते मरते॥

हिन्दुस्तान [illegible] नाते॥

[illegible] जायेंगे मरते मरते॥

मरने [illegible] जान पे अपनी [illegible]

[illegible] मरते मरते॥

हे। दीनवत्सल दयामय दयानाथ [illegible] प्रभाकर
इस वृद्ध भारत पिता तथा हिन्दी माता की रक्षा करते।

ग़ज़ल नं. १॥

ॐ

हे! मानवो क्या तुमने उस अजन्मा अनादि अनन्त सि

जिन कृपा सम्पत्ति पाई है हे र दया व नाम जो के लिए हैं

उस ईश्वर का … … वाली … … को

बडे कोटि पावन हो पर तुम … के भी … भगवान

को … देखो … … … हो जाते हैं.

१. किस बल के ये तीन पग हरदम हसते होते हैं।

दिन चुराते ते हैं, जो पता नहीं होते हैं ॥

… … से छिपा … … … ।

चाँद सूरज भी … हैं पर … नहीं होते हैं ॥

… को जानते हैं, … … अपना ।

देख कर आँखें … वो तीन … हैं ।

… के पार में दिन … … … पर

दूर होती है … हसते होते हैं ॥

हि गुणत्रयाहि … … … …

आतिः … … … समाप्य … ॥१॥

… … … … । … … ॥२॥

… … चैव । … … ॥

… … … … …

… … … … । … … ॥३॥

सिमरिन होगता दुलारभर भ को [illegible] भागा सोगा भा। स्त [illegible]

[illegible] गोरक्षा [illegible] कुला करभार। नीव देश में [illegible]

[illegible]

दोहा

गो रक्षा कीजे सुजन, यह भारी उपकार

इससे रक्षा जगत की, [illegible] है संसार ॥१॥

दीनों पर दया करो रे, गौ माता कहें रंभा के

दूध दही और घी खाते हो, मांस तक से हर्षाते हो।

बलवान मोटे हो जाते हो, नहीं सुरत पाप के

दुःख सागर से उबारो रे.. दीनों

जब रस चौ फल गया ओ, कंडो को आग में जलालो।

मूर्ख से उन्हें दया बना लो, सोतो पर ब्रज साथ के।

मत मां समझे पेट भरो रे, दीनों।

मरती बार चमड़ा आवें, यह बोल जूते बनवावें..

फिर भी हम पर तेग चलावें ना पहचानें विसर पके..

ईश्वर से न डरो रे, दीनों पै।

गाड़ी तोप रथों में चलते, मानो देखी काम निकलते।

फिर भी कुकर्मी सेना चलते मारत होत इशारे के

दिखला ऊँगी नजर होती हैं इतनी ज्योति मां

सासू ससुर को पूजती हैं सेवी नारी मां

हाथों से अपने जो करती स्वामी की सेवा मां

आंखों से रोज हाथ करती मैं शूली मां

यह सास ससुर हैं वही मेरी जगती है

स्वामी के स्वामी हैं पती के भी पती है

दोहा

पति ही व्रत पति ही जगत, पति ही प्राणाधार

पति ही की सेवा सदा है मुक्ति का द्वार ।।

आई कैकई पर विपदा की हाँसी आई जो नादिर होती है

मालीन हीं, जो लिखा है वह जो तेरी को दी जाती है

खाने में कड़वी लगती है पर रोगों को मिटाती है ।।

गाना

नहि जग में सतवन्ती नार

पतिव्रत निभाने में धन्य है पति ही है आधार

पति की सेवा पतिव्रता हो निश्काम ... रही।

पति आज्ञा ले जावे ... है अपना अधिकार

पतिव्रता जग में वही है जो ... सेवा ... रही

नारी का पति ही ईश्वर है पति ही प्राणाधार

पति ही सार तत्व है जग में और सूना संसार ॥ यही

चम्पक ऐसा कृष्ण कृता का भी विवाह के उपर आतुर

होता है और विनाश कि खातिर से जवाब देती है।

कहते हुवे यह बात जुबाँ कट नहीं जाती

पापों के बोझ से यह जमीं फट नहीं जाती

चण्डालन, क्यों कुदृष्टि से देखी को है तकता ।

क्यों सिंहिनी के सामने शृगाल है बकता ।

झुकता है अगर विश्व की सब शक्तियाँ चाँपे

तो भी पतिव्रता को कोई छू नहीं सकता ।

सब शास्त्र तो सदा यही उपदेश बखाने।

स्त्री का है धर्म स्वामी को ईश्वर जाने ॥

सासू को ~~[illegible]~~ जौते माता, श्वसुर को ईश्वर जाने

भ्राता पुत्र समान सकल जग को पहचाने ॥

पति विहीन सब शोक समाज इस पर अभिमन्यु की माता की

बात सुन कर उत्तरा आँसू भरकर रोती हुई कह रही है।

बिना पति सूना सब संसार

पति ही व्रत है पति ही तप है पति ही है करतार।

पति ही सेपति है इस तनकी पतिपत राखनहार
जब जो पति है तब जो था है नित पति विपत हजार
जाको नेह पराए मे पति के नहीं पतिव्रता नार
एक पतिव्रत रहे जगत में तो सब नरतन भार
बिना पतिव्रत के नारी का जीवन है धिक्कार।

दूसरा

जब जाना नहीं तो बतलाऊं कहां

शृंगार सुहाग के साथ गया टूटी चूड़ियन पर मान कहां।
मरज की हूं मैं तो जीते जी महाराज नहीं तो मान कहां ।
ये जीवन जीवन का धन है धन जीवन से जो रिझाऊं कहां॥

दिल हमने सरपदिया न नादाना समझकर
धोखे में उसे खा गये शक्कर का ना समझकर,
हरिद्वार में उतर पड़े बस्ती का माल समझकर
चोरी भर खाना घर आदाना समझकर
ख़ुदी के लिए ठग ले गये अपना समझकर
कहा हमें खेत खड़ा खा गये हमको समझकर
उनी का घी देखा देखकर आ जुगता है जोते
मोती चुरा जाते हैं गमन खाना समझकर

मुसल्मान तो यह है कि अब अपना पूर्व पोशाकमा किसी को भी

नहीं जाता है जिसमें आज कल के मनुष्य आदमियों के से फैसन हैं

श्लोकः

कोटरस्थ पतन्तूनस्य, मुखे घूटि मेवन्य॥

हे टकैट समा मुखा मैनित मैनस्यान क्षणम॥१॥

नतीजा क्या हुआ अब यह हाल हो रहा है

सं। इस गीरिता को छोड़ इस गीरिता में जात सुन्दर शरीर पाप मिलके कहावेंगे

पतनून घूट टोपी कम्फार्ट डाटि जांकट पाकट में चावल खावेंगे

पी पैंडी बरांडी हाथ पकड़ेंगे इंडिन के होके वश मद्योनित होटल में खावेंगे।

भारती के चारसौ तो अंग में नगाये जात नाना देवता गौकें नाम डुबावेंगे॥४॥

इंडियों और राक्षसियों में भेद होता है

श्लोकः

दर्शनाद्धरते चित्तं, स्पर्शनाद्धरते बलम्।

मैथुनाद्धरते वीर्यम्, वेश्या साक्षात्राक्षसी॥१॥

वेश्यासौ मदनज्वाला, रूपेन्धनसमेधिता।

कामिभिर्यत्र हूयन्ते, यौवनानि धनानि च॥२॥

स्वैरिणी वांणमुना वेश्या रूपम्

रतिं परस्त्रा ... री, महादेव गच्छति

अन्येषु रमते नित्यम्, स्वैरिणी साभिधीयते ॥३॥

गज़ल। ये सुखन ही आँख का निशाना है पिया जो मैं लिख ग्रन्थ करोगे ॥१॥
तुम अपने हाथों से अपना बेड़ा डुबाओगे और क्या करोगे ॥२॥
रक़ों से जब जेब होगी ख़ाली, सुनोगे फिर वाहीजी की गाली।
गले में गैरों के हाथ डाले हँसेंगी औ तुम ज़लाला करोगे ॥३॥
न कीर्ति ना आगर रहेगा तो ज़र रहेगा न घर रहेगा।
चमारखाने में नाम होगा सड़क पे झाड़ू दिया करोगे ॥४॥
न मान होगा न प्यार होगा, गले में लानत का हार होगा।
गलों के कुत्ते हैं जैसे जोते उसी तरह तुम जी मारा करोगे ॥५॥

दशा ऐसी हुई क्यों कुसंगति से - अतः एक दो गीत कुसंगति पर भी
आप लोगों को सुनाता हूं ध्यान से सुनिये॥

साँधुन सो संग नाहिं सूधे को संग नाहिं साहिब सों संग नाहिं
वाके सर जूतियाँ।

कहैं के कुलीन जाति दया कीन जाने भाँति परदारा सलोनी वाड़
लोनि संग सूतियाँ॥

खोले बरात बाति कुलन को दिया तैं गार मन प दशा त जैसे ज्ञाति की
कुतियाँ

कहैं कवि जीवन धिक्कार ऐसे जीवन को चेति कुति कारण ...

करें स्तुति मां ॥ लोक है भगवद् भक्त तुलसीदासजी खूब लिखते हैं

चौ० - परतिय लम्पट कपट सयाने, मोह द्रोह ममता लपटाने ॥

कुलवन्ति निकारहिं नारि सती गृह आनहिं चेरि निबेरि गती ॥

सिंहावलोकन न्याय से फिर आती हुई फैशन दृष्टि है

न पा रहिं हैं: स्वयं ही बिना किसी दूं गला पुनः विलोकन ति

मम गुल कासी - फैशन पर गान

इस फैशन का खूब निराला है, निराला ढंग आता है।

सिर पर धरा है टोप मानो हो पटोकरा,

मुंह के दाढ़ी मूछ ही ये जानो छोकरा,

गला कमीज वो चले नकटाई बोलता

कहीं आगे गला पहन आता है ॥ इस

सूट बूट पहिनके ले हाथ में छड़ी,

और न सेवा [illegible] उठ गये फिर बांध के घड़ी

फैशन जो पुराने [illegible] फैशन है इस घड़ी

इनके इस का केवल काला है। इस ॥

लो सैर करने जा रहे लेडी भी साथ है

[illegible] रिक्शे में ही खाती हाथी का दांत है ॥

तेली का बैल देखलो न इसमें की भाँति है।
रंग मिलता है वैसा ही काला ॥ टेग॥
रूमाल है देखलो क्या रेशमी लिया
जिससे कि गूँगा झाड़ के मुँह भी सफा किया
प्यारा व स्वतन्त्र देश को यों तो डुबो दिया॥
अब हिन्दु धर्म का निशाना है ॥ टेग॥
ठीक है कि सन का कुछ भी दोष नहीं अंग्रेजी पढ़ के
कर वे ही क्या करेंगे।

दोहा।

जिस प्रकार अब चल रहा, फैसन का तूफान
आगे सुनाना है नहीं, पाठक चतुर सुजान॥१॥
चौदह पन्द्रह साल में, नौ, ये हो गये दास।
मात पिता के भी रहे, उससे सदा उदास॥२॥
एक तो गुलामी में पिता होके, बड़ा निराश।
बेटों की संसार में करे न कुछ भी आश॥३॥
अंग्रेजी पढ़कर हुआ, खुद तो जैन्टिल मैन।
हमसे नित नफरत करे, करके तिरछे नैन॥४॥
पिताजी अफसोस के मारे आहें भरते लोगों में [illegible]
गाल जाते हैं॥

(भजन) अंग्रेजी पढ़ाने से फायदा।

अपनी कमाई उमर भर की सब मैंने लगाई पढ़ाने में।
नहीं चैन से दूध कभी खाया सब कर दिया खर्च पढ़ाने में ॥१॥
अक़्ल तो सम गई अब देखो तो क्या केवल आंख बन्द लखना है।
छोड़ी अंग्रेजी पढ़ने पर मां बाप को नहीं समझता है ॥२॥
जब से कुछ अंग्रेजी की पढ़ ऐं गया तोड़ना सीख लिया।
बस तब ही से वे अपनी का यह राग जोड़ना सीख लिया ॥३॥
बस अंग्रेजी पढ़ाने का यही नतीजा होता है कि रक्खा क्या है।
अलबत्ता उम्र बिना ख्याल पर किसी की परवाह न कीजिये ॥

भजन! जाने क्या जादू है छुपा हुआ सरकार तुम्हारी आँखों में ॥१॥
दोनों जहान या दोनों का है दीदार तुम्हारी आँखों में ॥२॥
तुम मार भी सकते हो पल में तुम तार भी सकते हो पल में ॥३॥
शिव और अमृत का रहता है भण्डार तुम्हारी आँखों में ॥४॥
एक मूर्ति प्रकृति की आशा की है या छवि विराट भगवान की है।
संसार की आंखों में तुम हो संसार तुम्हारी आँखों में ॥५॥
दिन और रात का धोखा है, या [illegible] मक्का उल्टा है।
ऐसा काले मोर रंग का है,, तार तुम्हारी आँखों में ॥६॥
कहने का तात्पर्य यह कि उस निर्गुण ने ईश्वर को दिखा दिया है ॥

। पद्मपुराण। जले विष्णुः स्थले विष्णुः विष्णुः पर्वतमस्तके,
ज्वालामाला कुले विष्णुः ,, सर्व विष्णुमयं जगत ।।
इस श्लोक से सिद्ध करते हुए मूर्ति पूजन का खंडन ।

प्रश्न है तुम हो भगवन, तुम्हें कैसे रिझाऊं मैं
नहीं वस्तु कोई ऐसी, जिसे सेवा में लाऊं मैं ॥१॥
करूं किस तरह आवाहन, कि तुम मौजूद हो हर जा,
निरादर है बुलाने को, अगर घंटी बजाऊं मैं ॥२॥
तुम्हीं हो मूर्ति में भी, तुम्हीं व्यापक हो फूलों में,
भला भगवान को भगवान पर कैसे चढ़ाऊं मैं ॥३॥
लगाना भोग कुछ तुमको, बड़ा अपमान करना है।
खिलाता है जो सब जग को उसे कैसे खिलाऊं मैं ॥४॥
है जिसकी ज्योति से रोशन ये सूरज चंद्र औ तारे।
महा अन्धेर उसको अगर दीपक दिखाऊं मैं ॥५॥
भुजाएं हैं न गर्दन है न सीना है न पेशानी,
तुम हो निर्लेप नारायण, कहां चन्दन लगाऊं मैं ॥६॥
इस रीति से मूर्ति पूजकों का खंडन किया [illegible]

लोकमान्य तिलक के सम्बन्ध में श्लोकाभिलषित

मेरे सर्व गुण सम्पन्न साक्षात् ईश्वर मूर्ति दया सागर राम

कारुणीक गुरु जी का बनाया हुआ कुछ श्लोकों का संग्रह

हा हन्त वेद परिनिष्ठित शुद्धदृष्टिम्
पाश्चात्यनीति परिशीलन लब्धकीर्तिम्
श्री लोकमान्यतिलकं तिलकं नराणां
कालो हि दुष्ट हृतवान् सहसा महान्तम् ॥१॥

हे दैव वज्रकठिने कुटिलाशयासि
कारुण्यता तव गता जनता वदन्ति
लोकेषु यं विगणितं हि वयं धुनैव
श्री लोकमान्य हृतवान् सहसा जनानाम् ॥२॥

भूलोकमान्यो नृपनीति विज्ञो
अनघ्रिगोऽवैरि कुलेशसिंहः
गुणाकरः सर्वकला प्रवीणः
श्री लोकमान्योऽद्य गतो सुरालयम् ॥३॥

विधेः तव कृपा युता
कुमता सा विनवेक्ष्य लोकलिप्सी
अनयज्जनकार्यसाधनम्
नरं हि विना वृथा कृतम् ॥४॥